# उत्थान-पतन

## उपन्यास

जगदीश प्रसाद मण्डल

पहिल संस्करण : 2009
दोसर संस्करण : 2013

तेसर संस्करण : अगस्त- 2016

## समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ



अक्षर संयोजक : उमेश मण्डल

# 1.(क)

गामे-गाम केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ नवाह, केतौ चण्डी यज्ञ तँ केतौ सहस्र-चण्डी यज्ञ होइत। किएक तँ एगारहटा ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि। की हएत की नै हएत कहब कठिन। एकटा बालग्रह भेने तँ सुखौनी लगि जाइत अछि आ जैठाम एगारहटा ग्रह एकत्रित अछि तैठाम तँ अनुमानो कम्मे हएत। परोपट्टा भगवानक नाओंसँ गदमिसान होइत। जअ-तील आ घीक गन्धसँ हवा सुगन्धित। सबहक हृदैमे भगवानक स्वरूप बिराजैत। सभ व्यस्त। सभ हलचल। खर्चक कोनो इत्ता नहि। जेना निशाँ लगलापर बेहोशी होइत तहिना। जाधैर लोक कीर्तन मण्डलीक संग, मण्डपमे कीर्तन करैत ताधैर घरक सभ सुधि-बुधि बिसैर मस्त भऽ रहैत। मुदा घरपर अबिते कियो भूखल गाए-महींसक डिरियाएब सुनि चिन्तित होइत तँ कियो बच्चाकेँ बाइस-बेरहट-ले ठुनुकब सुनि बेथाकेँ दबैत तँ कियो आँखिक नोर होइत बहबैत।

चारि सालक रौदीक चलैत पोखैरक पानि सूखि गेल। नमहर-नमहर दराइर खेतसँ लऽ कऽ पोखैर धरिमे फाटि गेल। इनारक मटियाएल पानि भरि-भरि सभ घैलमे रखि फरिछा-फरिछा लोटा-गिलासमे लऽ लऽ पीबैत। लोक की करत। केतए जाएत। मृत्युक मुँह छोड़ि दोसर रस्ते की? औझुका कोलकाता ओ कलकत्ता नहि जैठाम अकाल आ समुद्री तूफानसँ ढेरो लोक मरै छल। जेकरा आइ अपन दोसर घर बुझि लोक जीवन-यापन करए

जाइए। औझुका पंजाब ओ पंजाब नहि जैठाम आन-आन राज्यक लोक जा खेत-खरिहाँनसँ कारखाना धरि खटि कऽ परिवारक भरण-पोषन करैए। पंजाबक ओ दशा छल, जैठाम कल-कारखानाक कोन गप जे खेतक माटि गेउर रंगक कंकर मिलल, बरखासँ भेँटो ने होइ छलइ। साइते-संयोग सालमे कहियो बरखा भऽ जाइत रहइ। ओतुक्का लोक पड़ा-पड़ा आन-आन राज्य जा हड़तोड़ मेहनत कऽ जीविका चलबै छल। बम्बई, औझुका मुम्बई नहि। ने सिनेमा उद्योग छल आ ने कल-कारखाना आ नहियेँ अखुनका जकाँ कारोबार...।

गंगानन्दकेँ तीस बीघा जमीन। तीन भाँइक भैयारी आ सतरह गोरेक आश्रम। जइ साल सवारी समए होइत ओइ साल आश्रम चला आ मालगुजारी दैयो कऽ अन्न उगैड़ जाइ छेलैन, जेकरा दु-सलिया-तीन-सलिया पुरान बना खाइत। सबाइयो लगबैत।

पहिल सालक रौदी गंगानन्दकेँ बुझिये ने पड़लैन। घरमे धान-चाउर परियाप्त रहैन संगे गाइयो-महींस-ले बड़का-बड़का दूटा नारक टाल रहबे करैन। पहिलुके जकाँ गंगानन्दक मन हरिअर।

दोसर साल घरक धान-चाउर लगिचा गेलैन। रौदमे, जहिना गाछक तोड़ल फूल मौलाए लगैत तहिना गंगानन्द मौलाए लगला। कुटुमो-सम्बन्धीक आबा-जाही बढ़ि गेलैन।

गंगानन्दक जेठकी बेटी रीता सासुर बसैत। चारि बेटी आ एक बेटाक संग रीता सेहो आबि गेलैन। रीताक जेठकी आ मैझली बेटी बिआह करै जोकर भऽ गेल। जँ कहियो रीता कोनो काजमे नैहर अबैत तँ काजक पराते सासुर जाइले धूम मचा दइत। किएक तँ सासुरक सभ भार रीते दुनू परानीपर। भैयारीमे जेठ रहने घरसँ बाहर धरिक सभ तरद्दुत करए पड़ैत।

रौदीक चलैत रीता धिया-पुताक संग छबो गोरे नैहर एली। मासोसँ ऊपरे भऽ गेल मुदा सासुर जाइक नाओंए ने रीता लइत। बाप-माए केना मुँह फोड़ि बेटीकेँ सासुर जाइले कहत। भरियाएल खर्चसँ गंगानन्द तेरे-तर कुहरैथ। मने-मन सोचैथ, एक तँ साल खेपब कठीन अछि, तैपरसँ कुटुम-

परिवारक धुमसाही..! मुदा कहथिन केकरा। बरखाक केतौ पता नहि। उपजा-बाड़ीक कोनो आशा नहि... ।

मने-मन रीता सोचैत जे जँ सुमनक बिआहक चर्च माए करत तँ ओकरे माथपर पटैक देबइ। अपना बुते पार लगाएब कठिन अछि।

सभ दिन गंगानन्द साँझू पहरमे भूजल चूड़ा फँकै छला। बीस मनिया कोठीटा मे चाउर बँचल। धान पहिने सठि गेल। धानक दुआरे चूड़ा कथीक कुटौल जाएत। पार्वती पतिक आदत बुझि चाउरे भूजि छिपलीमे लऽ दरबज्जापर नेने एलखिन। भूजल चाउर देख गंगानन्द मने-मन बुझि गेला जे धान सठि गेल। पुरान चाउर रहने भूजा पथरा गेल तँए सक्कत। पहिलुके फक्का मुँहमे लैत गंगानन्दक दाँत सिहैर उठलैन। दाँत सिहैरते गंगानन्द लोटाक पानि मुँहमे लऽ गुल-गुला कऽ घोंटलैन। मुँहक चाउर घोंटि छिपली आगूसँ घुसका देलखिन।

मने-मन पार्वती अन्दाजलैन जे सक्कत दुआरे भूजा नै खेलैन। मुदा उपए की..?

गंगानन्दकेँ तामस नै उठल। जँ घरमे धान रहैत तँ चूड़ा कुटौल जाइत मुदा नै रहने कएल की जाएत। जहिना लकड़ी जड़ि कऽ राख बनि शक्तिहीन भऽ जाइए तहिना गंगानन्दक दशा भऽ गेलैन।

गिलासमे चाह नेने गंगानन्दक नातिन आएल। दुनू परानीक नजैर सुमनपर पड़ल। चाह रखि सुमन आँगन चलि गेल।

लग्गी भरि हटल पार्वतीकेँ हाथक इशारासँ गंगानन्द लग अबैले कहलखिन। पार्वती बैसले-बैसल घुसैक कऽ लग एली। फुस-फुसा कऽ गंगानन्द कहलखिन-

"रीताक दुनू बेटी बिआहै जोकर भऽ गेल। जँ कहीं ऐ साल एकोटा बिआह ठानत तँ इज्जत बाँचब मुसकिल भऽ जाएत। हमहूँ तँ नने छिऐ।"

अखन धरि पार्वती अँगनासँ दलान धरि अबै-जाइ छेली। ऐसँ अधिक ने देखैक समए भेटलैन आ ने घरक नीक अधला बुझैक। नातिनक बिआह

बुझि अह्लादसँ पार्वती बजली-

"यज्ञो केकरो बाँकी रहै छइ। यएह तँ भगवानक लीला छैन जे गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरिक काज कहुना-ने-कहुना भाइये जाइ छइ।"

केचुआएल साँप जकाँ गंगानन्दक दशा। दिन ससरब कठिन। तैपरसँ पत्नीक चढ़ल बात आरो केचुआ चढ़ा देलकैन। मुदा जहिना केचुआ छोड़ैत साँपक साँस तेज भऽ जाइत तहिना नमहर साँस छोड़ैत गंगानन्द बजला-

"एहेन दुरकालमे जीनाइ कठिन अछि, तैपर बिआह सनक यज्ञ...। तहन तँ जेकरा सिरपर काज अबै छै, कोनो-ने-कोनो धरानी पार लगैबते अछि। दू सालक रौदीक झमारसँ घर फोंक भऽ गेल अछि। अखनो धरि पानिक कोनो आश नहि अछि। तँए, पहिने जीअब पार लगत तखन ने किछु। बिआह तँ एक-दू साल आगूओ बढ़ौल जा सकैए।"

ओलती लग ठाढ़ भऽ रीता माए-बापक फुसराहैट सुनैत। गप मोड़पर अबिते रीता आगू बढ़ि माए लग आबि ठाढ़ भऽ गेल। अपन बातकेँ छिपबैत गंगानन्द कठ हँसी हँसि पत्नीकेँ कहए लगलखिन-

"रीतोक बेटी बिआह करै जोकर भेल जाइ छइ?"

मुँह निच्चाँ केने रीता बजली-

"बाबू, दुनू बहिन तरे-ऊपरे भऽ गेल अछि। मुदा घरक जे दशा भऽ गेल अछि तइसँ अखन बिआह पार लगब कठिन अछि। जखन समए-साल सुधरत तखन बुझल जेतइ।"

मने-मन गंगानन्द सोचैथ जे घरक भार पड़लासँ सभ आगू-पाछू देख किछु करैए। मुड़ी डोलबैत गंगानन्द कहलखिन-

"हँ, से तँ ठीके। अखन बिआह करैक अनुकूल समैयो ने अछि। सिरिफ हमरेटा घरमे नै समाजमे बहुतोकेँ घरमे बिआहै जोकर बेटी अछि। सबहक पार तँ भगवान लगेबे करथिन।"

पिताक बात सुनि रीताक मनमे शान्ति एलइ। अपन परिवारक चर्च करैत रीता बाजए लगली-

"बाबू घरक हालत बड़ खराप भऽ गेल अछि। एक तँ दू-अढ़ाइ

बर्खक रौदी, दोसर एक्कोटा समाँग उहिगर नहि! कियो कमाए-खटाए नइ चाहैए। भरि दिन, गप-सप्प लड़बैत समए बितबैए। घरक कोनो धैन-फिकिर नहि। भैयारीमे जेठ रहने दुनू परानी काजक पाछू भरि दिन अपसियाँत रहै छी।”

मास पुरैमे दू दिन बँचल। मालगुजारीक अन्तिम सूचना दिअ राजक सिपाहीकेँ पटवारी पठौलक। सिपाही आबि गंगानन्दकेँ कहलकैन-

“परसू तक जँ मलगुजारी नै देबै तँ जमीन निलाम भऽ जाएत। पटवारी अपन जाति-बेरादर बुझि चुपचाप पठौलैन। नइ तँ कानून-कैदासँ काज हएत।”

जहिना कोनो राजाकेँ राज छीनि कऽ भगा देलापर मनमे धक्का लगैत तहिना सिपाहीक समाचार सुनि गंगानन्दक मनमे एहेन धक्का लगलैन। छाती धकधकाइत, कण्ठ सुखैत गंगानन्द सिपाहीकेँ कहलखिन-

“अखन जे दशा अछि तइमे मलगुजारी देब असम्भव अछि। दोसर कोनो रास्ते ने देखै छी।”

गंगानन्दक मजबुरी बुझैत सिपाही कहलकैन-

“एकटा उपए अछि।”

गंगानन्द कऽ सुखाइत कण्ठसँ बहरेलैन-

“की?”

कने घुसैक कऽ लग आबि सिपाही कहलकैन-

“पटवारीकेँ बिआहै जोकर बच्चिया छैन। अहाँ अपन बेटाक बिआह कऽ लिअ। देबो-लेब नीक भेटत। हुनके हाथक काज छैन, जमीनक रसीद सेहो दऽ देता। कियो बुझबो ने करत आ काजो भऽ जाएत।”



शब्द संख्या : 1105

# 1. (ख)

बचनाक अवाज सुनि फुलिया जत्ता चलाएब छोड़ि एक हाथसँ हथरा पकड़ने आगू तकलक। बचनाक मन, जेना धिया-पुताक हाथसँ कौआ रोटी लपैक उड़ि जाइत तहिना सोगाएल। पत्नीसँ नजैर मिलते बचना बाजल-

"लछमीपुर जाइ छी जँ कोनो गर रूपैआक लगि जाएत तँ लगौने आएब।"

नैहरक नाओं सुनि फुलियाक मनमे गुदगुदी लगल। मुदा विपैतक चद्देर ऊपरेसँ झाँपि देलकै। सोगाएल मने फुलिया बाजल-

"जाउ, कपार तँ फुटले अछि मुदा तैयो अपना भरि परियास करू। कपार तँ उनटबो-पुनटबो करै छइ। जँ कहीं नीके गरे उनैट जाए। कनीए थमि जाउ। रोटी पका दइ छी। खा कऽ जाएब।"

मन्हुआएल बचना ठोर पटपटबैत बाजल-

"बड़ बढ़ियाँ। तुरन्ते हमहूँ दूटा दारही खोखरौने अबै छी। नहाइयो लेब।"

बचना दाढ़ी कटबए विदा भेल। फुलिया जत्ता लगक चिक्कस समेट मुजेलामे उठौलक। मुजेला लऽ जा कऽ चुल्हि लग रखलक। चिक्कस रखि कोठीपर सँ चिक्साही सूप आनि गठूलासँ जारैन आनए गेल। हाँइ-हाँइ चुल्हि पजाइर रोटिपक्का घीपैले चुल्हिपर चढ़ौलक। मुजेलासँ लप लऽ लऽ चिक्कस निकालि सूपमे रखलक। पानि दऽ हाँइ-हाँइ सानए लगल। जाबे रोटिपक्का धिपलै ताबे रोटियो ठोकि लेलक। हाथपर ठोकल रोटी रोटिपक्कामे दऽ

पकेलक।

नौआ गाममे नहि। मूड़नक पता लऽ कऽ सुखेत गेल छल। बिनु दाढ़ी कटौनहि बचना घुमि कऽ आबि गेल। अलगनीपर सँ धोती लऽ नहाइले विदा भेल। जाबे बचना नहा कऽ आएल ताबे फुलिया थारीमे भाँटाक सन्ना आ रोटी परोसि कऽ रखने। हाँइ-हाँइ बचना खा कऽ अँगा पहिर, हाथमे छाता लऽ सासुर विदा भेल।

बचना रस्तो चलए आ मने-मन 'जय महावीरजी, जय महावीरजी' घुनघुनेबो करए। लछमीपुर लग पहुँचते मने-मन महावीरजीकेँ गोड़ लगि, सबा रूपैआक चीनी कौबला केलक। कौबला करिते जेना बचनाक मनमे संतोख भेल जे काज हेबे करत।

लछमीपुर पहुँचते बचना सबहक मन खसल देखलक, जेना केते भारी विपैतमे सभ पड़ल हुअए। करेजपर पाथर रखि बचना सरहोजिकेँ पुछलक-

"किए सभ अनून-बिसनून जकाँ छैथ?"

नोराएल आँखिये सरहोजि कहलकैन-

"पाहुन, की कहबैन खेतक मलगुजारी दू साल पछुआ गेलै तँए परसू सभटा खेत लिलाम भऽ जाएत।"

सरहोजिक बात सुनि बचना अवाक् भऽ गेल। मनमे उठलै- के केकर दुख हरत! सबहक गति तँ एक्के रंग अछि! बचना पएरो ने धुअ लगल, चोट्टे गाम घुमि आएल।



शब्द संख्या : 332

# 1. (ग)

बिशेसर घरक आगूमे रस्तापर लोक सभ ठाढ़। रौदाएल बिशेसर हर जोति कऽ अबिते छल। हाथमे हरबाही पेना आ माथमे गमछाक मुरेठा बन्हने। फरिक्केसँ बिशेसर सुनलक जे कचहरीक सिपाही बलजोरी बाड़ीमे कदीमा तोड़ि लेलक। बिशेसरक पत्नी केतबो मनाही केलकै मुदा सिपाही नै मानलक। मोहिनी आ सिपाहीक बीच रक्का-टोकी होइते छल, कदीमा सिपाहीक हाथेमे। लग अबिते बिशेसर सिपाहीकेँ चारि-पाँच पेना लगा कदिमा छीनि लेलक। आ अनधुन गरियबैत सिपाहीकेँ कहलक-

"बापक बाड़ी बुझि कदीमा तोड़लेँ। तूँ सिपाही कचहरीक छीही की हमर?"

चारि-पाँच गोरे बिशेसरकेँ पकड़ने मुदा तैयो जोशमे हुरैक-हुरैक मारैक कोशिश करैत। लोकक कहलासँ शान्त भेल। मुदा तामसे ठोर पटपटाइते रहलै। शान्त भऽ बाजल-

"अहाँ समाज मिलि पकड़लौं तँए चुप भऽ गेलौं मुदा पच्चीस बेर सिपाहीकेँ कान पकैड़ उठाउ-बैसाउ, चाहे थूक फेक कऽ चटाउ। जे फेर एहेन गलती नइ करए। ई चोर छी! लालिश कऽ देबइ। जहलसँ कहियो निकलए नइ देबइ। ई राँड़-मसोमात हमरा बुझलक!"

बिशेसरकेँ मात्र दू कट्ठा घराड़ीए-टा। सेहो बेलगान। दुइए गोराक आश्रमो। बेटा-पुतोहु भीन। एकटा तेरह हाथक घर जइमे दूटा हन्ना बनौने। एकटा मे अपने दुनू परानी रहैत आ दोसरमे बेटा-पुतोहु। कनीए-टा अँगना

जइमे तीनू भागसँ टाट लगौने। बाँकी डेढ़ कट्ठा बाड़ी बनौने। मोहिनी अपन बाड़ीमे सभ दिन राशि-राशि कऽ तरकारी उपजबैत आ बिशेसर दुनू उखराहा बोइन करैत।

दुनू परानीक मिलानक चर्च सौंसे गाममे होइत। अपन-अपन काज बँटने। कोनो हरहर खटखट नहि। दू-सेर-चारि-सेर अन्न घरोमे रहैत। साठि बर्खक बिशेसरक जुआन जकाँ तन दुरूस। ने एकोगो दाँत टुटल आ ने केश पाकल। जेना दोसर-तेसर बोनिहार पचास बरख पुरैत-पुरैत झुनकुट बुढ़ जकाँ भऽ जाइत, तेना नहि। नियमित जिनगी बना दुनू परानी बिशेसर जीबैत।

डेढ़ो कट्ठा बाड़ीमे मोहनी कोदारिक काजसँ लऽ कऽ खुरपी हसुआँ धरिक काज अपना हाथसँ करैत। लत्ती-फत्ती-ले छोट-छोट मचानो अपने बना लइत। तरकारीक गाछ रोपैसँ लऽ कऽ ताक-हेर-पटौनी-कमौनी सभ मोहिनीए करैत। अँगने जकाँ चिक्कन बाड़ियो बनौने। दस हाथक एकटा लग्गी बनौने जइसँ गाछक सूखल ठौहरी सभ तोड़ैत।

बिशेसर तमाकुल खाइत आ मोहिनी हुक्का पीबैत। अमलो असान। एक्को पाइ खरच नहि। कातिकमे मोहिनी साए गाछ तमाकुलक रोपि लइत। जेकरा सभ तरद्दूत कऽ दइत। माघ अबैत-अबैत गाछ जुआ जाइत। गाछक रंगो बदलए लगैत। गाछकेँ जुआइते काटि लइत। ओइमे बीचला पात बाँछि खाइले रखैत आ निचला पातकेँ, कनोजरिकेँ पीनी कुटैले रखि लइत। जे सालो भरि दुनू बेकतीकेँ चलैत।

बिशेसरक बेटा भोलिया जाबे छोट छल ताबे माइक संग घर-आँगनक काजसँ लऽ कऽ जारैन धरि तोड़ि अनै छल। जखन नमहर भेल तँ पिताक संग बोइन करए लगल। बिआहो भेलइ। मुदा छौड़ा-मारड़िक संगतमे पड़ि भाँग पीबए लगल। बाड़िये-झाड़ीमे भाँगक गाछ। ओकर फूलो झाड़ि-झाड़ि आ जट्टाबला डारियो काटि-काटि सूखा-सूखा रखैत...।

बिशेसरकेँ कोनो जनतब नहि। मुदा माए देखै। भिनसरू पहरकेँ

जखन बिशेसर काज करए विदा हुअए तँ भोलिया सुतले। दू-चारि दिन बिशेसर खिसिया कऽ 'छौड़ा अवारा भऽ गेल', 'मौगियाह भऽ गेल' कहि अपने काज करए चलि जाइत। भोलिया घुमिते-घामिते रहि जाए। एक दिन खिसिया कऽ बिशेसर कहलकै-

"तूँ बेटा छँह एकर माने ई नइ जे तूँ मालिक भऽ गेलँह! दू परानी तोहूँ छँह। बिनु कमेने खेमे की? भीन रह आकि साझी मुदा कमाइए पड़तौ। जो आइसँ फुटे भानस कर।"

कहि बिशेसर भोलियाकेँ भीन कऽ देलक।

साँझू पहरकेँ बिशेसर सभ दिन डेढ़ियापर बिछान बिछा, जाबे भानस होइ, भजन-कीर्तन करैत। असगरे बिशेसर खौजरियो बजबैत आ भजनो गबैत। ने दोसर कोनो साज आ ने कियो संगी। अपने गबैया अपने बजनियाँ आ अपने सुननिहार।

पाँचेटा भजन बिशेसरकेँ अबैत। जएह सभ दिन गबैत। जखन भजन करए बैसए, तखन एक झोंक खूब झमाझम कऽ 'जय सतनाम जय सतनाम जय सतनाम जय-जय सतनाम गबैत...।'

चुल्हि लग मोहिनी भानसो करैत आ घुनघुना-घुनघुना सतनामो-सतनाम करैत।

'सतनाम'क पछाइत 'साँझ भयो नै आयो मुरारी' बड़ी अह्लादसँ बिशेसर गबैत। अड़ोस-पड़ोसक सभ पाँचो भजन सीख नेने। जहाँ बिशेसर भजन शुरू करै आकि सभ अपना-अपना अँगनामे घुनघुना-घुनघुना गबैत। 'साँझ' गौला पछाइत बिशेसर विनती गबैत। विनती गबै काल तेते तन्मय भऽ जाइत जे बुझि पड़ैत जेना भगवान हृदैमे बैस गेलखिन। विनती समाप्त होइते खौजरी रखि तमाकुल चुना कऽ बिशेसर खाइत। मोहिनियोँ चुल्हिये लग हुक्का भरि पीबैत। तमाकुल फेक कुरुर कऽ कृष्णक रूपक वर्णन शुरू करैत। रूप वर्णनक समए बिशेसरकेँ बुझि पड़ै जे अन्तर्ज्ञानसँ ब्रह्माण्ड देख-देख गबै छी। गबैत-गबैत बिशेसर उठि कऽ ठाढ़ भऽ खौजरियो बजबैत आ ठुमकी चालिमे झुमि-झुमि नचबो करैत...।

असगर रहितो बिशेसरकेँ बुझि पड़ैत जे हजारो-लाखो लोकक बीच नाचि-गाबि रहल छी। कखनो हँसबो करैत तँ कखनो मुस्कियेबो करैत, तँ कखनो आँखिसँ नोरो झहरए लगैत। पछाइत तौनीसँ मुँह-हाथ पोछि बिशेसर सोहर शुरू करैत। सोहर गबैत-गबैत, भरि दिनक ठेही उतरल बुझि पड़ैत। अन्तमे समदाउन गाबि भजन समाप्त कऽ लइत।



शब्द संख्या : 709

# 2.

रोहितपुरक दानोक चर्च बुड़हो-बुढ़ानुस आश्चर्जसँ करैथ जे एहेन अन्हड़ जिनगीमे नै देखने छेलौं। खेतमे हवा उठल। खढ़-पात उड़ए लगल। गोलियाइत हवा पहिने सुरुंगा ऊपर-मुहेँ–अकास दिस बढ़ल। बढ़ैत-बढ़ैत पसरए लगल। जे हवा खेतमे उठल ओ दौगैत टोलमे प्रवेश केलक। टोलमे प्रवेश करिते अन्हड़ घर-दुआरक छप्परकेँ उड़बैत, क्षणेमे हजारो घरकेँ खसा-पड़ा देलक। सभ चकित! जे नर्तकी जकाँ नचैत हवा कनीए कालक पछाइत एहेन भयंकर रूपमे बदैल गेल जे गामकेँ उजाड़ि-पुजाड़ि कऽ एकबट्ट केलक।

दुपहरक समए तँए गामक लोको छिड़ियाएल आ मालो-जाल बाधमे। अन्हड़ समाप्त होइते जे जेतए छल, दौगल गामपर आएल। कियो बच्चा सभकेँ ताकए लगल, तँ कियो माल-जालकेँ। गाममे एकोटा एहेन घर नहि बँचल जेकरा कोनो नोकसान नइ भेल होइ। समुच्चा गामक लोक विपैतमे डुमि गेल। के केकर नोर पोछत! सभकेँ अपने खसैत! जहिना सुरूज डुमला पछाइत अन्हारमे सभ किछु कारीए बुझि पड़ैत तहिना गामक माल-जालसँ लऽ कऽ मनुख धरिक दशा भऽ गेल।

रतनाक स्त्री नैहरमे रहैन। बेर झुकि गेल रहए। गाएकेँ पानि पीआ खाइले आगू ओगाड़ि, अन्हार होइ दुआरे चोरबतीकेँ गमछामे लपेट, काँख तर लऽ बच्चो आ स्त्रियोकेँ आनए सासुर विदा भेल। मुँह सूखल, छाती धकधक करैत मुदा तैयो रतना आगूओ बढ़ैत आ पाछुओ घुमि-घुमि तकैत। मनमे होइ जे फेर ने कहीं अन्हड़ दोहरा कऽ चलि आबए। मनमे ईहो होइ जे

ओमहर सासुर जाइ छी आ एमहर गाममे जँ अन्हड़ चलि औत तब तँ आरो पहपैटमे पड़ि जाएब...।

गामक सीमा टपिते रतना खूब झोंकसँ कखनो दौगबो करैत आ कखनो असथिरोसँ चलैत। रस्तामे बिशेसर भेँट भेलइ। भेँट होइते बिशेसर कुशल पुछलकै। कुशलक उत्तर दैत रतना बाजल-

"पाहुन, की कहब नाश भऽ गेल! सबहक घर अन्हड़मे गिर पड़लै। धड़फड़ाएल छी अखन नै रूकब। राता-राती बच्चा सभकेँ लऽ कऽ गाम घूमब।"

'अन्हड़' सुनि बिशेसर बाजल-

"जाउ-जाउ। एहेन विपैतमे रोकबो उचित नहि।"

रतना आगू बढ़ल। बिशेसर आँगन आएल। मोहिनी आँगनमे नै छेली मुदा नैहरक समाद जरूरी बुझि बिशेसर जोरसँ पत्नीकेँ शोर पाड़लक। पतिक अवाज सुनि मोहिनी धड़फड़ाएले एली। मोहिनीकेँ देख बिशेसर बाजल-

"नैहर उजैड़ गेल। रतना कहलक।"

चौल बुझि मोहिनी हँसैत बजली-

"नैहर उजड़तै हमरा दुश्मनकेँ, हमर किए उजड़त। अहूँक मुहसँ दुरभक्खे निकलैए आकि सासुर अकछ लगैए?"

समाचारकेँ सत बनबैत बिशेसर बाजल-

"एहनो चौल होइ छइ। हँसी-चौल हमरा अहाँक बीच हएत कि गामक अधला बजने हएत।"

बिशेसरक बातसँ मोहिनीक मुँह मलिन हुअ लगल। आँखिमे नोर अबए लगलै। आरो अधिक समाचार बुझैक जिज्ञासा सेहो बढ़लै। मुदा बिशेसरकेँ जेतबे गप भेल ओतबे बूझल, तँए ओइसँ आगू किछु कहबे ने करैत। दुनू चुप। कनी कालक पछाइत मोहिनी बजली-

"कनी रोहितपुर जा कऽ देख अबियौ। नइ तँ हमहीं जाइ छी।"

बुझबैत बिशेसर कहलक-

“ओहिना जा कऽ देखलासँ की हएत। जखन जाएब तँ किछु मदैत करबै। देखै छिऐ ने जेकर घर जरै छै ओकर सभ किछु जरि जाइ छइ। मुदा कुटुम-परिवार छुच्छे हाथे आबि-आबि खाली जिज्ञासा करै छइ। की हमहूँ-अहाँ ओहिना करबै। काल्हि भोरे दुनू परानी चलब। घरमे जे अन-पानि अछि सेहो लऽ लेब। अपनो लत्ता-कपड़ा लऽ लेब। जेते दिन रहलासँ हेतै ओते दिन रहि घर बान्हि देबइ।”

पतिक विचार सुनि मोहिनीक मन बदलल। पतिक कर्मठता देख मोहिनीक ह्रदैमे नव सिनेह सेहो जगल। मधुर स्वरमे पतिकेँ कहलखिन-

“हम तँ रोहितपुरक बेटी छी सभ काज कऽ देबै मुदा अहाँ तँ गामक जमाए छिऐ अहाँ केना..?”

बिशेसरक मन मदैतक अछि जखन कि मोहिनीक बेवहार आ प्रतिष्ठाक...। हँसैत उत्तर देलक-

“जखन नीक समए रहै छै तखन ने सासुर आ जमाए। अखन तँ सभ विपैतमे पड़ल अछि। दोस-महीम-कुटुम-परिवारक परीक्षा तँ एहने-एहने समैमे होइ छइ। जे कुटुम-परिवार वा दोस-महीम बेरपर ठाढ़ नै हएत, ओहन लऽ कऽ की लोक नाचत।”

सालक आखिरी मास। राजक सभ ऐमला-फैमला आमद-खर्चक हिसाब करैमे लागल। तीन रूपैआ महिनाक नोकरी बराहिल करैत। जे सालक अन्तमे एक्के बेर दरमाहा उठबैत। दरमाहा की उठबैत बखसीश उठबैत। दरमाहा तँ मासे-मास भेटै छै जइसँ लोक गुजर करैए मुदा राजक बराहिल तँ सैयो बीघा जमीनपर हुकुम चलबैत। खेती तँ अपने नहियेँ करैत मुदा एक बटेदारसँ दोसर बटेदारक बीच जमीन दइ-लइक अधिकार बराहिलेक छल। तैसंग धान-मरूआक सबाइ लगौनाइ, असुलनाइ सेहो ओकरे हाथक काज छल। केकरो बेइमान वा इमानदार बनाएब बराहिलक बामा हाथक खेल छल।

राजक कचहरीमे गामेक बराहिल मुदा गुमश्ता अन्तुका छल। आमदनीक खल दुनूकेँ फुट-फुट। धन कटनी, मरूआ कटनी वा रब्बी-राइक

आमदनी बराहिलक। तैसंग खरिहाँनक खरिहाँनी सेहो बराहिलेक खल छल।

गामक बराहिल रहने मालिक आ गौँआँक बीचक कड़ी सेहो। जखन बराहिल कलम-गाछी वा बाध घुमए जाइत आ एक बेर जोरसँ बजैत तँ सौंसे बाधक लोक बुझि कऽ सतर्क भऽ जाइत। जे सतर्क नै होइत ओकरा अनेरे दू-चारिटा गारि सुनए पड़ैत। गाममे ताड़ी पीआकक मेड़िया बराहिल बनौने। ताड़ीक खरच बराहिलक होइ। कमियोँ नहियेँ। मलिकाना पोखैरक माछ, बँसबिट्टीक बाँस इत्यादि बेच लइत।

गुमश्ता गाममे कम बुलैत। कचहरीएमे बैसले-बैसल सभ किछु करैत। सभ दिन बराहिल एक डाबा ताड़ी गुमश्ताकेँ पहुँचा दइत। असगरे गुमश्ता भिनसरसँ साँझ धरिमे जखन मन होइ चारि गिलास पीब लिअए। गुमश्ता सेहो गामक दू गोरेकेँ मिला कऽ रखने। दुनू गोरेक खाइ-पीबैक जोगार गुमस्ते करैत। एक गोरे गामक जुआन लड़की सभकेँ फुसला-फुसला अनैत। आ दोसर आम-कटहरसँ लऽ कऽ आनो-आनो चीज गाड़ीपर लादि गुमश्ता ऐठाम पहुँचबैत।

बराहिल ताड़ी खूब पीबैत मुदा समाजक बेटीकेँ अपन बेटी बुझि केकरो दिस आखि नै उठबैत। गुमश्ताक किरदानी बराहिल बुझैत तँए जखन मन होइ तखने दसटा गारि बराहिल दऽ दइत। जइसँ बराहिलक धाक गुमश्ताकेँ होइ। धान-मरूआ सबाइ लगबै काल गुमश्ता बोहियेमे जोड़-घटाउ कऽ हाथ मारि लइत। जइसँ बढ़ियाँ आमदनी भऽ जाइत।

सालमे पनरह दिन पटवारी आबि कचहरीक सभ हिसाब-किताब करैत। पटवारीकेँ अबिते बराहिल गाममे सबहक ओइठाम जा-जा मालगुजारी दैक सूचना दइत। कचहरी आबि-आबि किसान रसीद कटबैत। निलामी जमीनक बन्दोबस्त करब पटवारीक काज। गुमश्ता अपन आमदनीक चौथाइ भाग पटवारीकेँ दऽ सालो भरिक हिसाबक मुँह-मिलानी कऽ लइत।

पटवारी तीनटा बिआह केने। तीनू स्त्रीकेँ साए-साए बीघा जमीन दऽ

तीन गाममे घर बनौने। पोखैर-इनार, कलम-गाछी तीनूकेँ देने। जाबे पटवारी कचहरीमे रहैत ताबे गुमश्ता खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ऐश-मौजक वस्तु जुटेबैमे परेशान रहैत।

बिशेसर बोनिहार रहितो केकरो बान्हल नहि। सभ काज करैक लूरि बिशेसरकेँ। जे गिरहस्त पहिने आबि बिशेसरकेँ कहैत, ओकरेमे बिशेसर काज करए जाइत।

भोर होइते बिशेसर मोहिनीकेँ चरिआ भानस करैले कहि अपने घरक अन्न निकालि मोटरी बान्हए लगल। अनक मोटरी बान्हि अपन दुनू बेकतीक नुआ-बिस्तर चौपेत-चौपेत रखलक। भानस होइते दुनू परानी खा रोहितपुर विदा भेल। आगू-आगू बिशेसर माथपर मोटरी नेने आ पाछू-पाछू मोहिनी विदा भेल। रोहितपुरक दच्छिनबरिया बाधमे पहुँचते दुनू परानी रोहितपुरक दुर्दशा देखए लगल। दुर्दशा देख दुनू परानीकेँ जेना पएरमे जत्ता बन्हा गेलै तहिना डेग उठबे ने करइ। ठकुआ कऽ दुनू गोरे आमक गाछ तर बैस रहल। घरपर जाइक साहसे ने होइ।

मोहिनी मने-मन सोचए लगली जे एहेन अन्याय कहियो ने देखलिऐ। जखन कि बिशेसरक मनमे उठलै- दुओ मासमे सबहक घर बनत की नहि! जेकरा सभ समचा छै ओ तँ लगले घर बना लेत मुदा जेकरा किछु ने छै ओ तँ पछुआ जाएत! बिनु घरे रहत केतए..?

दुनू परानीकेँ रंग-बिरंगक बात मनमे उठए लगलै। तमाकुल चुना कऽ बिशेसर खेलक। तमाकुल खाइते मनमे एलै जे तत्खनात जे उजड़ल-पुजड़ल घरक समान हएत ओकरे काटि-छाँटि कऽ खोपड़ी जकाँ बना लेत। दू मास जे बोइन-बुता करत ओइसँ बाँसो आ खढ़ो कीनि पछाइत घर बान्हि लेत। ततमत करैत दुनू परानी उठि कऽ विदा भेल।

नैहर बुझि मोहिनी मोटरी माथपर लेलक। आगू-आगू मोहिनी आ पाछू-पाछू बिशेसर चलल। मोहिनीक भाइयो बोनिहार। एक्केटा घर मोहनाकेँ। मोहनाक घरक चार अन्हड़मे उड़ि कऽ एकटा केरा गाछपर लटकल, एकटा चार गाछपर अँटकल आ दोसर बाड़ीमे खसल। केरो गाछक

मुड़ी सभ टुटि-टुटि निच्चाँ-मुहेँ लटकल।

आँगन पहुँचते मोहिनीक माथपरसँ भौजाइ मोटरी उताइर ओसारपर रखलक।

मोहना ठाठक बन्हन काटि-काटि एक दिस कोरो रखैत आ दोसर दिस बत्ती। झोलाएल घर रहने दुनू परानी मोहना झोलसँ कारी खटखट भेल। बचनी मोटरी रखि अँगनेमे बिछान बिछा, बिशेसरकेँ बैसैले कहि लोटा लऽ कलपर सँ पानि आनए गेल। बिशेसर धोती-अँगा बदैल पानि पीब हाँसू लऽ ठाठक कोरो बत्तीक बन्हन काटि-काटि छँटियाबए लगल।

मोटरी खोलि बचनी चाउर निकालि भानसक सुर-सार करए लगली। छोट खुट्टीक बचनी, मेघदूती रंग, दोहरा देह, नमहर केश, करजनी सन गोल-गोल दुनू आँखि। जेहने बजैमे चरफर तेहने काजोमे पिच्छर। मुस्कियाइत बचनी मोहिनीकेँ कहलक-

"भगवानो खूब होरी खेलेलैथ! एक्के क्षणमे सौंसे गामक घर उजाड़ि कऽ फेक देलखिन।"

जहिना दुनू सारे-बहनोइ– बिशेसर आ मोहना, घरक ठाठ तैयार करैमे भीड़ल तहिना बचनी आ मोहिनी भानसमे। हाँसूसँ बन्हन कटैत बिशेसरक नजैर कोरोक दोगमे बगराक खोंतापर पड़लै। दुनू बगरा मुइल आ थौआ-थाकर अण्डा। बगराकेँ खाइले जे साँखर साँप अबै छल, ओहो खोंताक बगलेमे मुइल पड़ल। बन्हन काटब छोड़ि बिशेसर हँसुआक नोकसँ बगड़ो आ साँपोकेँ उनटा-पुनटा देखए लगल। कनी काल देख दुनूकेँ हँसुआसँ हटा काज करए लगल।

एगारहक अमल भऽ गेल। रौदो खड़ा गेल। दुनू ठाठक कोरो-बत्ती सेहो तैयार भऽ गेल। सड़ल कोरो आ सड़ल बत्तीकेँ छाँटि जारैन-ले रखि लेलक। रौदमे काज करब कठिन बुझि बिशेसर लतामक गाछक छाहैरमे ठाठ बैसबए लगल। मने-मन हिसाब जोड़ि बिशेसर दू हाथ छोट ठाठ बैसौलक। मोहनाकेँ अपना बाँस नहि, तँए पुरने कोरो-बत्तीसँ काज चलबए

चाहलक। ठाठ बैसा दुनू गोरे हाथ-पएर धोइ खाइले गेल। खा कऽ कनी काल लोट-पोट केलक। पछाइत दुनू गोरे ठाठ बान्हए लगल। सोझका ठाठ तँए चारि बजैत-बजैत दुनू तैयार भऽ गेल। ठाठ बन्हिते दुनू गोरे नओटा खुट्टा गाड़ए लगल। नओ खुट्टा गाड़ि ठाठ चढ़ेलक।

मोहनी आ बचनी कुड़कुट, बत्तीक टुकड़ी आ सड़लाहा कोरो सभ समेट कऽ जारैन-ले रखि लेलक आ नीकहा खढ़ सभकेँ समेट अँटियबैले बेरा कऽ रखलक। दुनू गोरे खर्ड़ासँ सौंसे खररलक।

काज लगिचाएल देख मोहना बिशेसरकेँ कहलक-

"पाहुन आब छोड़ि दियौ। काल्हि कऽ लेब। कोनो की भादो मास छी। काज चलै जोकर तँ भाइये गेल।"

हँसैत बिशेसर बाजल-

"जेहने कोंढ़ि अहाँ छी, तेहने भुटिया घरवाली छैथ। टहटहौआ इजोरिया अछि। दुनू ननदि भौजाइ नमहर-नमहर आँटी बान्हत। अहाँ चारपर फेकब हम ऊपरेमे सेरिया-सेरिया छाड़ैत जाएब। खाइ-पीबै राति धरि मठौतो मरा जाएत।"

मोहना तरे-तर खुशी होइत जे काल्हि घर गिरल आइ बनि गेल! मुदा रौतुका जगरनासँ मोहनाक देह भँसियाइत। भरि राति दुनू परानी मोहना आ बचनी जगले रहि गेल छल। एकटा ठाठ जखन छड़ा गेलै तखन बिशेसर मोहिनीकेँ कहलक-

"आब अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ गे। भानसो करए पड़त। ताबे हम दुनू गोरे काज करै छी।"

मोहिनी आ बचनी नहाइले चलि गेल। नहा कऽ आबि भानस करए लगल। घरो छड़ा गेल। चारपर सँ उतैर बिशेसर मोहनाकेँ कहलक-

"आइसँ सीख लीअ जे जेते नमहर विपैत आबए तइसँ बेसी अपन हिम्मत करी। जेते हिम्मत करब तेते असानीसँ काज हएत। अपन काज तँ लगिचाइये गेल, खाली टाट छुटल अछि। चारि बजे भोरे जाबे कौआ-डकतै-डकतै टाटो बैसा लेब। किरिण फुटैत-फुटैत ओहो बान्हि लेब। तइले

भरि दिन किए बरदाएब।"

कहि दुनू गोरे नहाइले गेल। दुनू गोरे नहा कऽ आबि अँगनेमे बिछानपर बैसल। राति बेसी भेनौं बिशेसर थोड़े काल भजन केलक। पछाइत मोहनाकेँ कहलक-

"कनी रवियाकेँ शोर पाड़ियौ?"

रविया मोहनाक पितियौत भाए। भरि दिन रविया दुनू परानी ठाठक बन्हन कटलक मुदा तैयो रहिये गेलइ। अबिते रविया पहिने बिशेसरकेँ आ पछाइत मोहिनीकेँ गोड़ लागि बाजल-

"पाहुन, किए शोर पाड़लौं?"

मुस्की दैत बिशेसर कहलक-

"रवि, हम सिरिफ मोहनेक बहनोइ नइ, अहूँक छी आ समाजोक छिऐ। तँए जाबे गामक सबहक घर नै बनि जाएत ताबे रहि सभकेँ मदैत करबै। भरि दिन काज करबै दुनू साँझ खेबइ। एक्को पाइ केकरोसँ बोइन नइ लेबइ।"

बिशेसरक बात सुनि रवियाक मन खुशीसँ गदगद भऽ गेलइ। बाजल-

"मोहना-भैयाक घर भऽ जेतै तखन ने हमर घर बान्हब?"

बिशेसर कहलक-

"मोहनक घर बनि गेल। सिरिफ टाटेटा लगबैले अछि जे घड़ी-पहर बान्हि लेब। काल्हि दुनू गोरे अहींक घर बान्हब।"

नमहर साँस छोड़ैत रविया बाजल-

"पाहुन, ठीके कहबी छै- 'एक गरूकेँ बहत्तैर आशा।' हमरा होइ छेलए जे घरमे बोइन नै अछि। अपनो बोइन नै करब तँ खाएब की?"

आशा दैत बिशेसर बाजल-

"रवि, हम बोइन करए नै एलौं। जँ बोइन करैक रहैत तँ बड़ीटा दुनियाँ छइ। केतौ करितौं, तइले सासुरे किए अबितौं। दस सेर दस टाका तँ अछि नहि जे तइसँ केकरो मदैत करबै मुदा देह तँ अछि। ऐ देहसँ जेते

जेकर मदैत हेतै, करबै।"

रविया-

"पाहुन घरक सभ चीज बाहरेमे छिड़ियाएल अछि। रौतुका समए छिऐ। अखन जाइ छी।"

रविया चलि गेल।

भुरूकबा उगल। मुर्गी वाँग दिअ लगल। फरीच जकाँ होइते छल कि बिशेसर मोहनाकेँ उठौलक। दुनू गोरे बत्ती-कड़ची जोड़िया पछवरिया टाट बैसौलक। जाबे सुरूज उगल ताबे टाट बान्हि पच्छिमसँ घरमे सटा देलक। टाटकेँ सोझ-साझ कऽ तीनू खुट्टामे चारि-चारिटा बन्हन दऽ देलक।

रविया ऐठाम बिशेसर विदा भेल। मोहना बीड़ी पीबै दुआरे पछुआ गेल। बिशेसरकेँ पहुँचते, रवियाक स्त्री सौंसे मुँह झोल लगा देलकै। बिशेसरकेँ कोनो गम नहि। धैनसन। मुनेसरी, जेहने बजैमे हलबलिया तेहने मुहोँ चमकबैमे। कनडेरिये आँखिये मुस्की दैत मुनेसरी बिशेसरकेँ कहलक-

"पाहुन, अहाँसँ हम बाजी लगाएब। जँ अहाँ हमरा काजमे हरा देब तँ हम अहीं सेने चलि जाएब, नइ तँ अहाँ..?"

मुँहक कारीख तौनीसँ पोछि बिशेसर जवाब देलक-

"अहाँमे हम केना सकब। अहाँ दू दाँतक बछौर छी, हम बुढ़ भेलौं। बाजी लगा हम जान गमाएब।"

चारू गोरे मिलि भरिये दिनमे घर ठाढ़ कऽ केलक। टाटो लगा लेलक। बिशेसर नहाइले गेल आ रविया दुनू परानी सौंसे खरड़लक। पहिने खर्ड़ासँ खड़ैर, पाछू बाढ़ैनसँ बहारलक। आँगन-घर तँ कारीए रहलै मुदा खढ़-पात साफ भऽ गेलइ। नहा कऽ आबि बिशेसर खौजरी निकालि भजन करए लगल।

परसू घरि रोहितपुर भकोभन लगै छल मुदा गोटि-पँगरा घर ठाढ़ भेने किछु-किछु चुहचुही आबि गेल।

कचहरीक गुमश्ता आ बराहिल रोहितपुर आबि सगरे गाम घुमि-फिर कऽ देखलक। सौंसे गामक गिरल घर लिखि गुमश्ता राजक मदैत-ले पटवारी

ऐठाम जा मुहोसँ कहलक आ गिरल घरक सूचियो देलक। आफद-असमानीमे राज मदैत करैत। पटवारी गुमश्ताक सभ बात सुनि कागत तैयार कऽ मनेजर लग जा सभ बात कहलक। मनेजर, हजारटा बाँस, हजार बोझ खढ़, हजार बोझ खरही आ हजार मुट्ठी साबे बँटैक आदेश दऽ देलक। आदेशक चिट्ठी पटवारीकेँ दैत फुसफुसा कऽ कानमे कहलक-

"अदहा बेच हमरा दऽ देब आ अदहा गाममे बाँटि देबइ।"

मनेजरक हिसाब सुनि पटवारी अपन हिसाब मने-मन जोड़ि पनरह दिनक समए लऽ लेलक। दोसर दिन कचहरी आबि गुमश्ताकेँ आदेशक चिट्ठी दैत कहलक-

"अढ़ाइ-अढ़ाइ साए सभ चीज बाँटि देबै, बाँकी साढ़े सत-सत-साएकेँ बेच कऽ दस दिनक भीतर पठा देब।"

जाबे पटवारी गुमश्तासँ गप-सप्प केलक ताबे बराहिल गंज बजारसँ ताड़ियो मंगौलक आ पोखैरसँ माछो ऊपर करबौलक। अण्डाएल अनेरूआ रौह माछ, खूब नमहर-नमहर कुटिया बना तड़बौलक। तीनू गोरे माछक चखना आ ताड़ी भरि-भरि मन खेलक-पीलक। खा-पी कऽ पटवारी चलि गेल।

गुमश्ता बराहिलकेँ पटवारीक हुकुम सुनौलक। चिट्ठियो देखए देलकै। बराहिलकेँ ताड़ीक निशाँ चढ़ि गेल रहइ। ललैक कऽ बाजल-

"एक-एक हजार समानमे साढ़े सत-सत साए बेचिये कऽ जँ आपसे कऽ देबै तँ गामक लोककेँ की देबै आ अपना दुनू गोरेक हिस्सा की हएत? जेकर घर उजड़लै दुख ओकरा होइ छइ। हम गौंआँ छी। गामक मरद-मौगी तँ हमरे मुँह नोंचत। एहेन काज हम किनौं नै करब। जाइ छी।"

गुमश्ता बराहिलसँ डरितो। बराहिलक विचारो ओजनदार। गम्भीर होइत गुमश्ता बराहिलकेँ कहलक-

"अखन हमरो निशाँ लगि गेल अछि, अखन जाउ। निचेनमे काल्हि भिनसर गप करब।"

बराहिल कचहरीसँ विदा भऽ गेल। कचहरीसँ निकैलते, गुमश्ता-पटवारीक सातो पुरुखाकेँ गरियबैत घरपर आएल। घरपर आबि चौकीपर बैस आरो जोर-जोरसँ दुनू गोरेकेँ गरियाबए लगल-

"सभटा चोर अछि! जेकर घर खसलै ओ वेचारा त्राहि-कृष्ण कऽ रहल अछि आ हिनका सभकेँ मोजेक-मोजे जमीन! तीन-तीनटा बहु। दहाइक-दहाइ बेटा-बेटी, तैयो सवुर नहि! हम समाजमे रहै छी। समाजक सुख-दुखकेँ अपन सुख-दुख बुझै छी। कोठरीक पंखा तरमे बैसनिहार गरीबक दुख की बूझत?"

बराहिलक गरियबैत देख-सुनि गौंआँ-घरूआ जमा भऽ गेल। जेते लोककेँ बराहिल देखैत ओते तामस चढ़ल जाइत। भरि मन खूब गरियौलक। निशाँ रसे-रसे उतरए लगलै।

सबेरे आठ बजे बराहिल कचहरी पहुँचल। गुमश्ता, भिनसुरका खोराक ताड़ी पीब नेने छल। बराहिलकेँ देखते गुमश्ता आग्रह करैत कहए लगल -

"आबह-आबह बराहिल! साँझखन जहिना तोहर मन खराब भऽ गेल रहह तहिना पटवारीक हुकुम सुनि हमरो भऽ गेल रहए। ऐठाम तँ हमहीं-तोहीं रहै छी। ऐठामक नीक-अधला तँ हमरे-तोरे सोचए पड़तह। मुदा एक दिस समाजक बीच रहै छी दोसर दिस राजक नोकरी सेहो करै छी। तँए दुनूकेँ मिला चलए पड़तह। जइसँ साँपो मरै आ लाठियो ने टुटइ।"

कहि गुमश्ता घरसँ ताड़ीक डाबा निकाललक। चारि गिलास अपनो आ चारि गिलास बराहिलोकेँ पिऔलक। ताड़ी पीबते बराहिलक मन शान्त भेल। बराहिलक सभ तामस ताड़ी तरमे दबा गेल। मुस्कियाइत गुमश्ता बराहिलकेँ कहलक-

"हजार बाँस, हजार बोझ खढ़, हजार बोझ खरही आ हजार मुट्ठी साबे बँटैक जे आदेश भेल अछि, ओ तँ हमहीं तोहीं बँटबै। कियो तँ देखैले नै औत। जे मन फूरत से करब। तोहर की विचार?"

गुमश्ताक विचार बराहिलकेँ जँचल। मुड़ी डोलबैत बराहिल बाजल-

"हौउ, गुमश्ता साहैब अहाँ अनतए रहै छी। हम तँ गामक छी। हमरा तँ दुनू देखए पड़त।"

"हँ, बिल्कुल ठीक कहलह।"

"केना मिला कऽ चलब?"

गुमश्ता-

"सभ वस्तुकेँ डेढ़िया कऽ दहक। साढ़े सात-सात साइक हिस्सा आगू पठा देबइ। अदहामे दू-दू साए सभ वस्तु बाँटि देबइ। बाँकी बेच कऽ दुनू गोरे अदहा-अदहा बाँटि लेब।"

बराहिल-

"हँ, ई एकतरहक विचार अछि। ई करब कन्ना?"

गुमश्ता-

"पाँचो जातिक मैनजनकेँ बजा लाबह। एक-एक साए सभ चीज पाँचू मैनजनकेँ दऽ देब। एक-एक साए तूँ अपन मेलुआकेँ दऽ दिहक। मैनजनेकेँ भार दऽ देबै जे कचहरीक हुकुम अछि आदहा-अदहा दाम सभ वस्तुक लगत।"

बराहिल मानि गेल। समान लेबालक कमी नहि। खाँहिस सभकेँ। केकरो बाँसक जरूरी तँ केकरो खढ़क। बाँसक बीट-लग जा बराहिल बाँस कटबए लगल। अदहा दाम लैत जाए आ बाँस कटबैत जाए। किछु गोरे उधारियो लैलक। खढ़, खरही, साबे सेहो अनधुन बराहिल बेचए लगल। जखन सभकेँ मंगनी, मोल, उधारी बाँस, खढ़, खरही आ साबे भेटलै तखन रोहितपुरबलाकेँ राजक एहसास भेलइ। आफत-असमानीमे राज मदैतो करैए!

रोहितपुरक सभ बोनिहार घरहटिया नहि। तँए काज रहनौं बोनिहार बेकार बैसल। बोनिहारकेँ बैसारी देख बिशेसर सभकेँ बजौलक। एका-एकी बिशेसर सभकेँ पुछए लगल-

"अहाँकेँ बाँस काटल हएत?"

'हँ'

'बत्ती चीरल हएत?"

'हँ'

'बत्ती छिलल हएत?"

'हँ'

'बन्हन देल हएत?"

'हँ'

'खढ़ अँटियौल हएत?"

'हँ'

'खरौआ जौर बाँटल हएत?"

'हँ'

'टाट बान्हल हएत?"

'हँ'

"जखन सभ काज करैक लूरि ऐछे तखन बैसल किए छी?"

जेकर-जेकर घरहट बाँकी छल, सबहक ओइठाम बिशेसर जा-जा कहलक-

"अनेरे अहाँ सभ घरहट पछूएने छी। जहिना बड़का भुमकम भेने छोट-छोट झटका अबैत रहैए तहिना जँ अन्हड़ोक होइ तखन तँ पहपैटमे पड़ि जाएब। तँए जेते जल्दी भऽ सकए ओते जल्दी घरहट कऽ लिअ। समानो ऐछे। बनौनिहारो ऐछे। तखन अनेरे पछुएलासँ की लाभ।"

मुदा गामक लोक तँ अखन धरि यएह बुझैत जे पाँचे-छअ गोरे घरहटिया अछि जे काज करिते अछि। बेरे-बेरी ने हएत।

बिशेसर सभ बोहिहारकेँ बजा कहलक-

"अपन-अपन सभ मेड़िया बना-बना सभसँ काज कराउ। काजो अधिक हएत आ बोनिहार सभकेँ बैसारियो नइ हएत?" लाटमे काज केलासँ सभ सीखबो करत आ रोजियो चलतै।"

बिशेसर बढ़ियाँ घरहटिया जे सभ बुझैत। अखन धरि गाममे बिनु कोनो कारणे, एक-दोसरक बीच कटुता, दुश्मनी जे छल ओ बिहाड़िक विपैतमे उड़ए लगल। भाए-भैयारी जकाँ सम्बन्ध बढ़ए लगल। नव विचारक जन्म समाजमे भेल। हँसी-मजाक, खिस्सा-पिहानिक बीच सभ काज करए लगल। साँझ पड़िते सभ काज छोड़ि, अपनामे सभ विचार करैत जे केकर-केकर घरहट आइ भेल आ केकर-केकर बाँकी रहल।

अखन धरि जे जातीय कटुता, धरमक उन्माद सबहक मनमे छेलै ओ धीरे-धीरे कमए लगल। छुआ-छूत, ऐगली-पैछलीक विचार ढील हुअ लगल। सभ मनुख छी, सबहक देहमे एक्के रंग खून अछि तँए सभ एकरंग छी।

बिशेसरक चर्च सौंसे गाममे चलए लगल। जैठाम बिशेसर काज करै छल तहीठाम रहि खेबो करए आ साँझू पहर खौजरी बजा भजनो करए।

अमृतलाल बड़ धनीक तँ नइ मुदा मध्यम रहलासँ समाजमे प्रतिष्ठित बूझल जाइत। हुनको दूटा घर गिरल आ दूटाक कोनचर उजड़ल रहैन। अमृतलाल बिशेसरकेँ कहलखिन-

"पाहुन, बजैत तँ लाज होइए मुदा विपैतमे पड़ल छी। काल्हिसँ हमरो घरहट कऽ दिअ?

हँसैत बिशेसर उत्तर देलकैन-

"जिनगीमे अहिना आपैत-विपैत अबैत-जाइत रहै छै आ अबैत-जाइत रहत। जहियासँ मनुख अछि तहियेसँ हजारो-लाखो बेर अन्हड़-तूफान, पानि-पाथर आ भुमकम होइत आएल तँए कि मनुख मेटा गेल? जहिना हमर-अहाँक पुरखा सभ विपैतकेँ झेललैन तहिना हमहूँ सभ झेलब। तइले निराश किए हएब। अखन हमहीं-अहाँ छी तँए अखन हमरे-अहाँकेँ सामना करए पड़त। आगू-ले ऐगला पीढ़ी करत।"

बिशेसरक विचार अमृतलालक हृदैमे चुभि गेलैन। कनी काल गुम्म रहि बजला-

"पाहुन, अहाँ गरीब रहितो देहसँ मदैत करए एलौं। ऐसँ पैघ की भऽ सकैए। अखन अहूँ भजन करैले सुढ़ियाएल छी आ हमरो बहुत काज सभ अछि। जाइ छी।"

अमृतलाल चलि गेला। बिशेसर भजन करए लगल। आँगन पहुँच अमृतलाल पत्नीकेँ बिशेसरक सम्बन्धमे कहलखिन। नैहरमे सावित्रीक घर एकटा पण्डितक घर लग छैन। बच्चेसँ सावित्री पण्डितजीक अचार-विचारसँ प्रभावित। सावित्री बजली-

"यएह छी मनुखक महानता। जे विपैतमे समाँग जकाँ मदैत करए। खेनाइ तँ घरोक लोक खाइए। मुदा अपनो खनदान दिस तँ तकबै, जँ मंगनी कोनो समान भेटत तँ ढेरिया लेब। गामोक बोनिहार तँ बोइन-जलखै लैते अछि मुदा बिशेसर-पाहुन तँ खेबेटा करता। गामक जमाए छैथ, ईहो तँ बुझए पड़त। जहिना ओ हमर घर बनौता तहिना तँ हमरो सोचए पड़त।"

अमृतलाल-

"हँ, ई तँ ठीके कहलौं। अहाँक की विचार?"

सावित्री-

"जखन घरहट भऽ जाएत, तखन हुनका धोती पहिरा विदा करबैन। खेनाइ तँ अनको-आन दइए।"

भोरे बिशेसर मेड़ियाक संग अमृतलाल ऐठाम आएल। अमृतलाल घरक समचा जोड़ियबैत रहैथ। अबिते बिशेसर धोती-अँगा बदैल पुरना धोतीक टुकड़ा पहिर अमृतलालकेँ कहलखिन-

"पहिलुके जकाँ घर बनाएब आकि ओइसँ छोट-पैघ?"

अमृतलाल-

"घर तँ ओतबेटा बनाएब। मुदा कोरो-बत्ती नव-पुरान मिला कऽ देबइ।"

बिशेसरकेँ देख सावित्री मने-मन सोचए लगली- बिशेसर गरीबक सकलमे साक्षात् महादेव छैथ। तँए अनका ऐठाम जेहेन खेनाइ-पिनाइ भेल होइन मुदा हमरो तँ प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। जहिना अपन जमाए तहिना तँ

समाजोक।

मासे दिनमे, उजड़ल गाम पुनः नव बनि गेल। दुनू परानी बिशेसर अपना गाम विदा भेल। रोहितपुर सिरिफ घरेटा सँ नै विचारोसँ नव बनि गेल।

◌

शब्द संख्या : 3349

# 3.

रोहितपुरसँ सटले लालपुर। घनगर बस्ती, सभ जातिक लोक बसल। परोपट्टामे सभसँ पुरान गाम। घनगर तेहेन जे बहुतो गोरे बेटा-बेटीक बिआह गामेमे केने। बस्तियो तेहेन गदाल जे आइ तक कियो नै सौंसे गामकेँ भोज खुआ सकल। ओना, सभ जातिक बीच जबार, सौजनी आ सभैती भोज आइ धरि अपन-अपन आन-आन गामसँ चलैत। शुरूमे गाम उत्तरे दछिने बसल। मुदा परिवारो बढ़लासँ आ आनो-आनो गामक लोककेँ आबि बसलासँ गामक नक्शे बदैल गेल। जहिना उत्तरे-दछिने पहिने छल गाम तहिना आब पुबे-पच्छिमे भऽ गेल। जे कियो आन-आन गाम जा कऽ पढ़लक मात्र ओतबे पढ़ल-लिखल लोक गाममे। ने रोहितपुरमे स्कूल आ ने लगे-पासक कोनो गाममे। गाममे एकटा हकीम जे मात्रिक-अलीनगरमे जा पढ़ने। ओइ हकीमक माम बढ़ियाँ हकीम जे अपने लग रखि भागिनकेँ पढ़ौने। पढ़ल-लिखलमे एकटा दीनानाथो जे वैदागिरी करैत। परोपट्टामे एकेगो वैद दीनानाथ।

बच्चेमे दीनानाथ घरसँ पड़ा गेल रहए। पड़ाइक कारण भेलै जे जखन आठे-नअ बर्खक रहए तहिये माए मरि गेलइ। पिता दोसर बिआह कऽ लेलखिन। पिता तँ दीनानाथकेँ बेटे जकाँ मानथिन मुदा सतमाए फुटलो आँखिये नै देखए चाहथिन। हदिघड़ी दीनानाथकेँ दू-चारिटा बात-कथा कहिते रहथिन। माइक बातसँ तंग आबि दीनानाथ घरसँ पड़ा गेल। लालपुरोक आ लगो-पासक गामक पच्चीस-तीस गोरे पटुआ काटए मोरंग-

दिनाजपुर जाइत रहए। ओही मेड़ियाक संग दीनानाथ धऽ लेलक। भोरुके गाड़ी पकड़ैक विचार सबहक भेलै, किएक तँ तमुरियासँ निर्मली जाइक गाड़ी तीन बजे भोरमे रहइ। जँ ऐ गाड़ीसँ नै जाएब तँ पछाइत दस बजे दिनमे गाड़ी तमुरियासँ निर्मलीक अछि। जेकरा पकड़ने बारह-एक बजे निर्मलीए पहुँचब। जइसँ गेलापर कोसियो धार पार भेल हएत की नहि? ई शंका सबहक मनमे रहइ। मुदा तीन बजे भोरुका गाड़ी पकड़ने साढ़े पाँच-छअ बजे निर्मली पहुँच जाएत। जइसँ गेलापर लोक असानीसँ सबेर-सकाल कोसीपार भऽ आठ नअ बजे राति होइत-होइत बथनाहा पहुँच जाइए।

बथनाहासँ जोगबनी जाइक अन्तिम बस साढ़े-दस बजे रातिमे तँए ओकरा ठेकानि कऽ सबहक संग दिनानाथो विचारि लेलक जे भोरुका गाड़ी पकैड़ विदा हएब। ने माएकेँ किछु कहबैन आ ने पिताकेँ। चुप-चाप विदा भऽ जाएब। जँ माए-बाबूकेँ कहबैन तँ जाइए-कालमे अट्ठाबज्जर खसत। तँए ने दीनानाथ कपड़ा-लत्ता साफ केलक आ ने बटखरचा-ले केकरो कहलक। मने-मन दीनानाथ विचारि नेने जे माएबला चानीक पाइत आ सोनाक छक जे चोरा कऽ रखने छी, ओ लऽ लेब आ निर्मलीमे बेच बटखरचोक ओरियान कऽ लेब आ पेंटो-गंजी कीनि लेब। नाहक खेबाइ आ बसक भाड़ा सेहो भाइये जाएत।

रातियेमे पटुआ कटनिहार सभ खा-पी कऽ गाड़ी पकड़ैले तमुरिया विदा भेल। किएक तँ एक-दू गोरे तँ छी नहि। पच्चीस-तीस गोरेक संगोर करैमे गाड़ीए छुटि सकैए। सबेर-सकाल टीशन पहुँचने ओतै मुसाफिर खानामे कनी काल सुतियो रहब आ भोरमे गाड़ियो असानीसँ पकड़ा जाएत। दीनानाथो पाइत आ छक लऽ संग लगि गेल। तमुरिया स्टेशन पहुँच सभ अपनामे विचार केलक जे भाड़ा-भुड़ीक पाइ एकठाम जमा कऽ लिअ। किएक तँ सभ जँ अपन-अपन दिअ लगबै तँ हूलि-मालि हुअ लगत। ई सोचि तीन-तीन रूपैआ सभ कियो बौआजी लग जमा केलक। बौआजी सबहक मेट। साले-साल पटुआ काटैले, धान रौपैले आ धान काटैले मोरंग जाइत-

अबैत।

दीनानाथ तमुरियामे टिकट नइ कटौलक किएक तँ पाइए ने रहइ। भोरमे गाड़ी अबिते सभ चढ़ि गेल। निर्मली पहुँचैत-पहुँचैत भिनसर भऽ गेलइ। गाड़ीसँ उतैर दीनानाथ बौआजीकेँ कहलक-

"कक्का, हमरा एकजोड़ चानीक 'पाइत' आ एकटा सोनाक 'छक' अछि। ओकरा बेच दिअ। जइसँ बटखरचो भऽ जाएत आ कपड़ो नइ अछि सेहो कीनि लेब।"

दीनानाथक बात सुनि बौआजी पुछलक-

"बौआ, तूँ जे हमरा सबहक संग जाइ छह से तोरा बुते पटुआ काटल हेतह। पटुआ काटैमे बड़ भीड़ होइ छइ। तहूमे मोटका-मोटका जोंक सेहो पकड़ै छइ।"

दीनानाथ तँ घरसँ तंग आबि भागल, तँए जीबठ बान्हि बाजल-

"हम केतौ नोकरीए धऽ लेब। नै बहुत दरमाहा देत तँ नै देत। कम-सँ-कम खाइयोले तँ देत।"

दीनानाथक बात सुनि बौआजी गुम्म भऽ गेल। सभकेँ मुसाफिर खानामे बैसाए दीनानाथकेँ संग केने बजार विदा भेल। दोकानो सभ बन्ने। सोना-चानीक दोकानदार नहा कऽ पूजा करैत। बौआजीकेँ देख रूपचन पुछलक-

"हमरा दोकानक काज अछि?"

"हँ, एक जोड़ पाइत आ एकटा छक बेचैक अछि।"

आमदनी देख रूपचन हाँइ-हाँइ पूजा कऽ दोकान लगौलक। भिनसुरका समए। तँए रूपचन सोचलक जे कम्मो नफ्फापर समान कीनि लेब। जँ गहिंकी घुमि कऽ चलि जाएत तँ भरि दिन खटपट होइते रहत।

दुनू वस्तुकेँ जोखि सेठजी आठ रूपैआ दाम सुनेलकै। आठ रूपैआ सुनि दीनानाथ मने-मन खुशी होइत जे बहुत भेल। आठो रूपैआ लऽ दीनानाथ एक रूपैआकेँ चूड़ा-मुरही, दू आनाक गुड़, एक रूपैआमे एकटा तौनी, एक रूपैआमे एकटा गंजी आ आठ आनामे एकटा झोरा कीनलक।

झोरामे सभ समान रखि गंजी पहिर लेलक। टीशनपर आबि सबहक संग दीनानाथो विदा भेल।

निर्मलीसँ सोझे पूब-मुहेँ सभ विदा भेल। पाँच कोस पूब कोसी धार। तीनटा नमहर-नमहर धार सटले-सटल। जइ तीनूमे नाहसँ पार हुअ पड़ैत। पहिल धारक कात पहुँचैत-पहुँचैत दस बजि गेलइ। धारक कातमे ठीकेदार खोपड़ी बनौने। जैठाम तीनू धारक खेबा लइत।

सभ कियो ओइ खोपड़ीमे बैस जलखै करए लगल। जलखै खा सभ कोसीए-क पानि पीलक। धारक पानियोँ हरिअर कचोर। पानि देख सभकेँ नहाइक मन होइ मुदा रस्ता काटै दुआरे कियो ने नहाएल।

घाटक ठीकेदार छपरिया। जे खूब मनमानी घाटपर करैत। सुखलो धारक खेबा खिहारि-खिहारि ओसलैत। जँ कियो खेबा नै दिअ चाहै तँ ओकरा गरियेबो करैत आ मारबो करैत। मुदा बिनु खेबा नेने किनौं नइ छोड़ैत।

घुमती नाह अबिते सभ चढ़ल। नाह खुगलै। पानिक वेग देख दीनानाथकेँ डर हुअ लगलै। बाँकी गोरे साले-साल पार होइत तँए सभकेँ बूझल। दीनानाथक मनमे होइ जे जँ कहीं बीच धारमे नाह डुमत तँ एक्को गोरे ने बँचब। तँए दीनानाथ मने-मन 'कोसी महरानी की जाय' जपए लगल..। तीनू धार पार होइत-होइत बेर झुकि गेल। नाहसँ उतैरते दीनानाथ कोसी धारकेँ गोड़ लगि सबहक संग विदा भेल।

बथनाहा पहुँचैत-पहुँचैत गोसाँइ डुमि गेलइ। भूखो सभकेँ लगि गेलइ। बस अबैमे देरी बुझि सभ अपन-अपन मोटरी खोलि चूड़ा निकालि खाए लगल। जाबे बस एलै ताबे सभ चूड़ा फाँकि-फाँकि पानि पीलक। बस अबिते बौआजी कन्टेक्टरकेँ सभ आदमीक गिनती करा चढ़ौलक। दीनानाथक अदहा मासुल आ सबहक पूरा मासुल जोड़ि बौआजी कन्टेक्टरकेँ दऽ देलक। बस चलल। जोगबनी जाइत-जाइत रातिक आठ बजि गेल।

जोगबनी आ बिराटनगरक बीच नेपाल भारतक सीमा। सीमापर एकटा पाथरक पीलर गाड़ल। रतिगर बुझि सभ सोचलक जे एतै राति बिताएब नीक हएत। बिजलीक इजोतो रहइ। बस स्टेण्डमे सभकेँ बैसा बौआजी रहैक जगह टेबए लगल। बिजलीक इजोतसँ दिने जकाँ बुझि पड़ैत।

बस स्टेण्डसँ बीघा भरि दच्छिन एकटा वैदक घर। घरक बगलेमे एकटा अशोकक गाछ। अशोकक गाछक निच्चाँमे ईटा-सिमटीक चबुतरा बनल। चबुतरा देख बौआजीक मनमे एलै जे बड़ सुन्दर जगह अछि, एतै राति बिता लेब। चबुतराक बगलेमे एकटा चापा-कलो। बौआजी चबुतरा देख घुमि कऽ आबि सभकेँ कहलक। सभ अपन-अपन मोटरी लऽ विदा भेल। चबुतरापर सभ अपन-अपन मोटरी रखि कलपर हाथ-पएर धुअ लगल। हाथ-पएर धोइ सभ अपन-अपन मोटरी खोलि रोटी आ अल्लुक भुजिया निकालि-निकालि खाइक सुर-सार करए लगल। भरि दिन सभ फँके-फुँकी खा रस्ता काटने तँए सभकेँ जोरगर भूख लगल। दीनानाथकेँ रोटी नहि, तँए चूड़ा-गुड़ निकालि खाइक विचार केलक। चूड़ा-गुड़ देख बौआजी दीनानाथकेँ कहलक-

"बौआ, फाँक्का-फुँक्कीसँ पेट थोड़े भरै छइ। चूड़ा रखि लएह। हमरा तीन दिन खाइ जोकर रोटी अछि। तोहूँ रोटीए खा।"

दीनानाथ चूड़ा रखि लेलक। बौआजी तीनटा रोटी आ भुजिया देलकै दीनानाथ खाए लगल। सभ कियो रोटी आ भुजिया खा भरि पेट पानि पीलक। पानि पीबते सभकेँ ओंघी लगलै। पतियानी लगा सभ सुति रहल। भरि दिनक सभ थाकल। एक्के निने राति बित गेलइ।

भोरे वैद टहलैले निकलला तँ दीनानाथकेँ कलपर मुँह-हाथ धोइत देखलैन। एकटकसँ वैद दीनानाथकेँ देख लगमे जा पुछलखिन-

"बौआ, केतए रहै छह?"

दीनानाथ बाजल-

"मधमन्नी जिला रहै छी।"

“केतए जाइ छह?”

“नोकरी करए जाइ छी।”

नोकरीक नाओं सुनि, कनी काल गुम्म भऽ वैद पुछलखिन-

“एतै रहबह?”

दीनानाथ-

“हँ, रहब।”

वैद-

“मेड़ियाक मेट के छिअ?”

दीनानाथ बौआजीकेँ ओंगरीसँ देखा देलक। बौआजी लग जा वैद कहलखिन-

“ऐ बच्चाकेँ ऐठाम रहए दियौ। कोनो दिक्कत नइ हेतइ।”

बौआजी दीनानाथकेँ पुछलक-

“बौआ, एतै रहबह?”

दीनानाकेँ मनमे रहै जे केतौ ठर लगत तँ रहि जाएब। बाजल-

“हँ।”

दीनानाथ रहि गेल आ मेड़ियाक संग बौआजी पटुआ काटए विदा भेल।

सुशील अयुर्वेदिक वैद। दुइए परानी। दुनू परानी वैदागिरी करैथ। दीनानाथकेँ पाबि दुनू परानी सुशील हृदैसँ खुशी भेला। बेटा जकाँ दीनानाथकेँ मानए लगलखिन। दीनानाथो अपने माए-बाप जकाँ सेवा करए लगल। हदिघड़ी सुशील अपने संग दीनानाथकेँ राखए लगलखिन। सुशील जड़ी-बुटीक दवाइयो बनबैत रहैथ आ इलाजो करैथ। अपने बाड़ीमे सैयो किस्मक लत्तीसँ लऽ कऽ गाछ धरि लगौने। मासमे एक दिन उत्तरवरिया पहाड़पर सँ पहाड़ी जड़ी-बुटी आनए जाथि। दीनानाथोकेँ संग नेने जाथिन। पहाड़ो बेसी दूर नहि। छबे सात कोसपर। भिनसरे दुनू गोरे जलखै खा बस पकैड़ लैथ आ बेर धरि घुमि कऽ चलि अबैथ। शुरूमे तँ दीनानाथकेँ जड़ी

चिन्हबए पड़लैन मुदा किछुए दिनक पछाइत दीनानाथो जड़ी चिन्हए लगल। साँझू पहरकेँ जखन रोगी एनाइ पतरा जाइत तखन सुशील दीनानाथकेँ पढ़ेबो-लिखेबो करै छेलखिन। दीनानाथ एते तल्लीन भऽ रहए लगल जे घरक सुधि-बुधि सभ बिसैर गेल।

दस बरख दीनानाथ सुशील वैद लग रहल। दसे बर्खमे दीनानाथ वैद बनि गेल। रोग चिन्हैसँ लऽ कऽ दवाइ देनाइ, दवाइ बनौनाइ सभ सीख लेलक। बच्चा दीनानाथ जुआन भऽ गेल। बिआह करै जोकर भऽ गेल। सुशीलक विचार रहैन जे दीनानाथकेँ अहीठाम बिआह करा दिऐ, मुदा दीनानाथकेँ घरक सोह घींचए लगलै। बिसरल माए-बाप, सर-समाज मन पड़ए लगलै। एक दिन दीनानाथ सुशीलकेँ कहलकैन-

"बाबूजी, हम गाम जाएब। बहुत दिन माता-पिता आ समाजक लोककेँ देखना भऽ गेल।"

दीनानाथक विचार सुनि सुशील बजला-

"बौआ, दुनियाँ बड़ीटा छइ। सभ मनुखकेँ चाही जे केतौ रहि मनुखक सेवा करी। यएह सभसँ पैघ धरम छी।"

दीनानाथ सिरिफ दवाइए-दारू नै सीखलक बल्कि जिनगीक नीक-अधला सेहो सीखलक। बाजल-

"बाबूजी, मनुखक सेवा जरूर धरम होइत मुदा जैठामक लोक अधिक पछुआएल अछि ओकर सेवा तँ अगुआएल मनुखक सेवासँ पैघ होइत। ऐठाम देखै छी जे लोक बहुत अगुआएल अछि मुदा जैठाम हमर घर अछि, ओइठामक लोक बहुत पछुआएल अछि तँए ओकर सेवा करब हम पैघ बुझै छी।"

दीनानाथक विचार सुशीलक हृदैमे चुभि गेलैन। अपन सहमत दैत कहि देलखिन। दीनानाथ गाम चलि आएल।

गाम अबिते दीनानाकेँ देखैले गामक लोक उनैट गेल। अखन धरि सबहक मनमे यएह रहै जे दीनानाथ बौड़ गेल। मुदा बदलल दीनानाथ, गामक एक इंसान बनि, परिवारिक नहि समाजिक लोक बनि गाम आएल।

एक सुयोग्य वैद बुझि गौंआँ-सभ अपन-अपन समाँग बुझए लगल। सभ मने-मन सोचए लगल जे जइ दुखक चलैत परेशान रहै छेलौं ओइ परेशानीकेँ मेटबैबला आब गामेमे दीनानाथ भऽ गेल।

लालपुरमे सात पुश्तसँ लेलहाक घर। शुरूएमे लेलहाक पूर्वज जेतए घर बनौने छल ओतए बारह कट्ठा जमीन बनौलक। बीचमे घर आ चारूकात किछु बाड़ियो आ किछु धनखेतियो। लेलहाक परिवार एक-पुरखिया। खनदानमे बेटी तँ बेसियो होइत मुदा बेटा एक्केटा। लेलहोकेँ एक्केटा बेटा गुलबा। गुलबा लताम तोड़ए गाछपर चढ़ल। गाछेपर देह झुनझुनाए लगलै। पहिने तँ गुलबा बुझलक जे ऊँच-नीचमे पएर पड़ल तँए देह झुनझुनाएल मुदा झुनझुनी बढ़िते गेलइ। झुनझुनी बढ़ैत देख गुलबा धड़फड़ा कऽ गाछपर सँ उतैर अँगना आबि माएकेँ कहलक-

"माए, सौंसे पीट्ठी झुनझुनाइए।"

झुनझुनी सुनि माए आँगनमे बिछान बिछा गुलबाकेँ सुतैले कहलक- आ घरसँ करूतेलक शीशी आनि मालिश करए लगल। मुदा तइसँ एक्को मिसिया झुनझुनी कमल नहि। झुनझुनी बढ़ैत देख गुलबा कानए लगल। कानब देख गुलबाक माए-तेतरी पतिकेँ बजबए विदा भेल।

दछिनबरिया बाधमे लेलहा गाए चरबैत। फरिक्केसँ तेतरी, लेलहाकेँ गाए चरबैत देख, जोरसँ शोर पाड़ए लगल। मुदा पछबा हवा दुआरे लेलहा सुनबे ने करैत। तेतरी सोरो पाड़ैत आ आगू-मुहेँ बढ़लो जाइत। जखन तेतरी कनी और लग पहुँचल तखन लेलहा सुनि पुछलक-

"किए एते हल्ला करै छी। कनी फरिछा कऽ कहूँ।"

"गुलबाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेलइ! चलू गामपर!"

भूतक नाओं सुनिते लेलहाक देह थरथराए लगलै। गाए हँकने घर दिस विदा भेल। तेतरी चोट्टे घुमि आएल। तीनू माल– गाए, गौड़ आ एकटा बच्छाकेँ हँकने लेलहा घरो दिस अबैत आ मने-मन विचारबो करैत जे अही बेर दशमीमे दूटा नवकी कनियाँ डाइन सीखलक। ओही दुनू मौगियामे

केकरो किरदानी छी। भरिसक मन्तर पक्का बनबै दुआरे गुलबाक जान लेत।

घरपर आबि लेलहा तीनू मालकेँ बान्हि एक आहूल घास आगूमे दऽ गुलबाकेँ देखए अँगना आएल। टोलक लोकसँ अँगना भरल। लेलहाकेँ देख एकटा बुड़ही, जिनका सभ दादी कहैत, बजली-

“गुलबाकेँ भूत लगल छौ। झब-दे ढोरबाकेँ बजौने आ। माथाहाथ देतै, लगले छुटि जेतइ।”

दादीक बात सुनि तेतरी डपटैत घरबला-कैँ कहलक-

“बकर-बकर मुँह तकने हएत। जल्दी ढोरबा भैयाकेँ बजौने आउ?”

डरे लेलहाक देह थर-थर कँपैत। भूतक ओते डर लेलहाक मनमे नै होइत जेते गुलबा मरने वंशक अन्त होइक। दौगल लेलहा ढोरबा ऐठाम विदा भेल। ढोरबा घरपर नहि। बाँस काटैले बँसबारि गेल छल।

ढोरबाक घरपर लेलहा पहुँच भाँज लगबए लगल। मुदा घरपर कोनो भाँजे ने लगलै। बड़ी काल एमहर-ओमहर ताकि ढोरबाक भनसियाकेँ पुछलक। ढोरबाक भनसिया बाँस काटैक नाओं कहलकै। चोट्टे लेलहा ढोरबाक बँसबारि दिस विदा भेल।

तीन सलिया पाकल बाँस ढोरबा कटने, जे घींचले ने होइ। असगरे ढोरबा अपसियाँत-अपसियाँत भेल। सगरे देह पसेनासँ भीजल। चारूकात आँखि उठा ढोरबा तकैत जे केकरो देखबै तँ शोर पाड़ि बाँस घींच लेब। लेलहाकेँ अबैत देख ढोरबा बैस कऽ तमाकुल चुनबए लगल। जाबे लेलहा लग आएल, ताबे ढोरबो तमाकुल चुना अपनो मुँहमे लेलक आ लेलहो हाथमे देलक। लेलहाक कँपैत देह देख ढोरबा पुछलक-

“एना कँपै किए छह?”

मिरमिरा कऽ लेलहा बाजल-

“भैया, की कहबह। छौड़ाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेलै तँए तोरा बजबैले दौगल एलौं। जल्दी चलह।”

लेलहाक बात सुनि ढोरबा बाजल-

“अहीले एते अपसियाँत छह! जखन आबि गेलह तँ भूत कि भूतक

बापो रहत तँ छोड़ि कऽ भागए पड़तै। बाँस झोंझमे ओझरा गेल अछि, पहिने ओकरा उताइर दैह तखन चलब।"

लेलहा-

"ताबे बाँस छोड़ि दहक। पहिने चलह। पछाइत बाँस उताइर कऽ लऽ जैहह।"

"झार-फूकक बात तूँ नै ने बुझबहक। गामपर जा कऽ पहिने हाथ-पएर धोअब, देहपर गंगाजल छीटब, तखन ने घरक गोसाइकेँ गोड़ लागि, देह बान्हि विदा हएब। एक-पर-एक दाय-माय आ एक-पर-एक करामाती डाइन-जोगिन छैथ। जँ कहीं उनटे चोट कऽ दैथ! तखन?"

दुनू गोरे बाँस घींचए लगल। केतबो जोर दुनू गोरे दइ मुदा बाँस निकलबे ने करैत। पात तोड़निहार बाँसक छिपकेँ कड़चीसँ गछाड़ि देने रहइ। ढोरबा हियासि कऽ बाँस देखए लगल तँ मुड़ी गछारल नजैर पड़लै। तखन ढोरबा बाँसपर चढ़ि गछरलाहा कड़चीकेँ काटलक। कड़ची काटि कऽ उतैर जहाँ दुनू गोरे एक्के जोर देलक कि बाँस हरहरा कऽ निकैल गेल। बाँस उतारिते ढोरबा हाँइ-हाँइ पाँगए लगल। लेलहा कड़ची बीछए लगल। कड़चीक बोझ बान्हि लेलहा लेलक आ ढोरबा बाँस कान्हपर लऽ विदा भेल।

घरपर अबिते ढोरबा इनारपर जा हाथ-पएर धोइ, आँगन जा गंगाजल छीटि, गोसाइकेँ गोड़ लगि, देह बान्हि निकलल। दुनू गोरे विदा भेल।

लेलहाक आँगनमे लोकक करमान लगल। लेलहा ऐठाम पहुँचते ढोरबाकेँ तेतरी कहलक-

"भैया, झब-दे देखथुन। गुलबाकेँ जी घींचने जाइ छइ।"

ढोरबा टीक खोलि लेलहाकेँ कहलक-

"दूटा कुश लाबह।"

लेलहा बाजल-

"भाय की कहबह, ऐ बेर तेहेन बाढ़ि आएल जे कुशो दहा गेल। गाममे कियो ने कुश उखाड़लक। एक्को दिन बाप-दादाकेँ जलो ने देलिऐ।

केतएसँ कुश आनब।"

लेलहाक बात सुनि ढोरबा कहलक-

"नै कुश भेटतह तँ चौड़काँटू बाढ़ैनमे सँ दूटा नेने आबह।"

तेतरी बाढ़ैनमे सँ दूटा चौड़काँटू निकालि ढोरबाक हाथमे देलक। ढोरबा झार-फूक करए लगल। झाड़ैत-फुकैत जेते मन्तर ढोरबाकेँ अबैत रहै ओ सभटा ठोर पटपटबैत पढ़ि गेल। मंत्र पढ़ि मुहसँ फूकि गुलबाकेँ पुछलक-

"बौआ, मन केहेन लगै छौ?"

कुहरैत गुलबा बाजल-

"ओहिना लगैए।"

ढोरबा तेतरीकेँ कहलक-

"सभकेँ अँगनासँ हटा दियौ। मनतर काजे ने करैए।"

सभकेँ अँगनासँ हटौला पछाइत ढोरबा जोर-जोरसँ मनतर पढ़ए लगल। मुदा तैयो गुलबाक कनकनी असान नइ भेल।

कनी काल गुम्म भऽ ढोरबा बाजल-

"कनी पंचमीक माटि लाउ।"

पंचमीक माटि लेलहाकेँ अपना नहि, दशमीएमे चिक्कन माटि नै रहने ओहीसँ घर नीपि लेलक। पड़ोसिया-आँगनसँ तेतरी पंचमीक माटि आनि, सिलौटपर लोढ़हीसँ फोड़ि चँगेरीमे देलक।

बाढ़ैनक खढ़ रखि ढोरबा पंचमी माटिसँ झारए लगल। बीच-बीचमे गुलबाकेँ पुछबो करइ-

"मन केहेन लगै छौ, हल्लुक लगै छौ किने?"

जखन ढोरबा झारि कऽ निचेन भेल तखन फेर गुलबाकेँ पुछलक-

"आब बाज केहेन लगै छौ?"

गुलबा बाजल-

"ओहिना लगैए। एक्को मिसिया दुखेनाइ नै कमल।"

खिसिया कऽ ढोरबा विदा होइत लेलहाकेँ कहलक-

"नवटोल गहवरसँ भगता बजा लाबह। हमरा बुते नै छुटतै।"

ढोरबाकेँ विदा होइत देख तेतरी घौना पसारि कनबो करए आ बजबो करए-

"हे बरहम बाबा हम कोन अपराध केलियह जे एते सतबै छह।"

लेलहोक आँखिमे नोर ढबढ़बा गेल। दुनू हाथ माथपर लऽ मने-मन सोचए लगल- आब गुलबा नै बँचत..! कनी काल गुन-धुन कऽ लेलहा नवटोल जाइले तैयार भेल।

कोसे भरिपर नवटोल। भगतजीकेँ बजबए लेलहा नवटोल विदा भेल। रस्तामे लेलहा मने-मन कौबला केलक जे 'अगर गुलबाकेँ दुख छुटि जाएत तँ जोड़ भरि छागर बरहम बाबाकेँ चढ़ाएब।' चलबो करए आ मने-मन लेलहा 'जय बरहम बाबा, जय बरहम बाबा' जपबो करए। नवटोल पहुँच लेलहा गहवरक भगताकेँ भँजियाबए लगल।

भगता गाममे नहि। उजानमे हैजा भेल ओतै गेल। सोगाएल मन लेलहा रहबे करइ। असोथकित भऽ गहवरक आगूक अशोकक गाछक निच्चाँमे बैस भगताक रस्ता देखए लगल।

उजानक चारू सीमा बान्हि भगता नवटोल विदा भेल। थोड़बे कालक पछाइत पहुँचल तँ एकरा बैसल देखलक। चिन्हैत नहि। भगते लेलहाकेँ पुछलक-

"किए बैसल छी?"

सिमसल आँखि लेलहाक, पोछैत बाजल-

"भगतजीसँ काज अछि।"

"केहेन काज अछि, हमहीं छी।"

भगताक बात सुनि जेना वादलसँ झँपाएल सुरूज हवाक सिहकीसँ वादलकेँ छँटिते भुक-दे उगैत तहिना लेलहाकेँ भेल। मुस्कियाइत लेलहा भगतजीकेँ कहलक-

"भगतजी, हमरा बेटाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेल तँए बजबए एलौं।"

"हम तँ बेरागन दिनकेँ भाउ करै छी। आइ तँ बेरागन नै छी। डाली लगा दियौ शुक्र दिन आएब।"

बेवसीक अवाजमे लेलहा बाजल-

"भगतजी, कोनो उपए करियौ। अहीं केने सभ हेतइ। बड़ आशासँ आएल छी। ओहिना केना घुमि जाएब?"

देरी होइत देख तेतरी एक गोरेकेँ नवटोल पठौलक। धड़फड़ाएल आबि ओ लेलहाकेँ पुछलक-

"तोरे आशा-वाटी सभ तकै छह तूँ आबि कऽ ऐठाम बैस रहलक?"

मन्हुआएल लेलहा, बाजल-

"भगतजी नै छेलखिन तँए देरी भऽ गेल। अखने एलखिन तँ कहलयैन।"

ताबेमे भगतजी एकटा फूल नेने आबि दैत कहलखिन-

"गमछाक खूटमे बान्हि लिअ। घरपर पहुँचते कहालीकेँ खुआ देबइ। लगले छुटि जेतइ।"

फूल लऽ दुनू गोरे विदा भेल। रस्तामे होइ जे गुलबाकेँ की भेल हएत की नहि! मुदा करैत की। घरपर अबिते लेलहा गुलबाकेँ फूल खुऔलक। फूल खुएलाक कनीए कालक पछाइत लेलहा गुलबाकेँ पुछलक-

"मन केहेन लगै छौ?"

गुलबा कुहरैत बाजल-

"ओहिना लगैए"

गाममे अनेको रंगक बात चलैत। कियो बजैत-

"गुलबाकेँ डाइन केने छइ।"

तँ कियो कहैत-

"गुलबाकेँ देवी लगल छइ।"

कियो बजैत-

"मोतिया बेटी- जे मरि गेल, तेकरे संग ने हदिघड़ी खेलाइत रहै छल। वएह लगि गेल छइ। बिनु लऽ गेने थोड़े छोड़तै।"

बिच्चेमे गुलटेनमा आबि लेलहाकेँ कहलकै-

"एकटा गुनी कटहरबामे अछि, नेपालक सीख छी, ओकरा बजा आनह। जरूर छोड़ा देतइ"

कटहरबा लालपुरसँ सटले पच्छिममे कनीए-टा टोल अछि। कटहरक गाछ अधिक रहने 'कटहरबा' नाओं पड़लै। दौग-बड़हा करैत-करैत लेलहा असोथकित भऽ गेल। मुदा की करत। केतौ जाइक साहसे ने होइ मुदा विपैते तेहेन पड़ल छै मरितो दम तक छोड़त केना? लेलहा कटहरबा विदा भेल। कटहरबा जा गुनीकेँ भँजियौलक। गुनीसँ भेँट होइते लेलहा सभ बात कहलक। लेलहाक बात सुनि गुनी कहलकै-

"हम तँ खाली जनिजातिये-टाकेँ झार-फूक करै छी। पुरुखक मनतर नै अबैए। हम जा कऽ की करब। जँ जनिजाति रहैत तँ गारंटी दऽ छोड़ा दैतौं। केतेकोकेँ छोड़ेलौं। केहेन-केहेन भुतलग्गूकेँ जे बताह जकाँ करै छल, छोड़ेलौं।"

गुनीक नाओं भालेसर। कमाइले भालेसर नेपाल गेल। बिराटनगर पहुँच भालेसर उत्तर-मुहेँ विदा भेल। जाइत-जाइत धरानसँ तीन किलोमीटर पाछुऐ रहै कि गोसाँइ डुमि गेल। जंगली-पहाड़ी रस्ता। आगू बढ़ैक हिम्मते ने भेलइ। रस्ताक पच्छिम एकटा दू महला काठक घर देखलक। ओइठाम जा भालेसर घरवारीकेँ कहलक जे राति-बीच रहब। खाइक समान हमरा अपने अछि। सिरिफ रहैले दिअ। घरवारी एकटा मौगी। ओइ मौगीक पति काठमाँडूमे नोकरी करैत। तीस-चालीस बीघा जमीन जे ओ मौगीए सम्हारैत। ओ मौगी गुनी सेहो। दूटा छोट-छोट बेटा-बेटी। दू घर एतए दू घर ओतए, अहिना गाम। सभकेँ दू महला-तीन महला काठक घर। घरक नीचला हन्नामे मोटका-मोटका सखुआक लकड़ीसँ घेर माल-जाल बान्हैत आ ऊपरमे अपने रहैत। ऊपर-निच्चाँ भालेसरकेँ देख ओ गुनी बजली-

"एतए नोकरी करब?"

नोकरीक नाओं सुनि भालेसर 'हँ' कहलक। एक मास पहिनहि

पहिलुका नोकर गाम गेलै से अखन धरि घुमि कऽ नै आएल। औत आकि नै औत सेहो ठीक नहि। यएह बात सोचि गुनी भालेसरकेँ दू महलापर लऽ गेल। एकटा चौकीपर समानो रखैले आ बैसैयो-ले गुनी भालेसरकेँ कहलक। अखन धरि भालेसरकेँ कोनो चिन्ता मनमे नहि। मुदा जखन बुझलक जे मरद घरमे नइ छै, तखनसँ भालेसरक मनमे डर पैसए लगलै। गामक बात मन पड़लै जे लोक सभ बजैए जे पूभर मौगी सभ पुरुखकेँ भेड़ा बना खेतमे चरैले ठोकि दइ छइ। जँ कहीं हमरो तहिना करए, तखन तँ गामक बाल-बच्चा सभ बिलैट जाएत! एलौं कमाइले आ भऽ जाएत किछु-सँ-किछु! मुदा आब अन्हारो भऽ गेल जँ जेबो करब आ रस्तामे बाघ सिंह खा गेल तखन तँ आरो चौपट भऽ जाएत! एते बात मनमे अबिते भालेसरक मन उड़ि गेल। किछु बजबे ने करए। चौकीएपर पड़ि रहल।

अभ्यागत बुझि गुनी भालेसरकेँ आगत-भागत करए लगली। पहिने चाह बना पिऔलक। चाह पीला पछाइत मुरही आ चारिटा अण्डा तड़ि कऽ जलखै करैले देलक। जेते गुनी सुआगत करैत तेते भालेसरक मन उड़ल जाइत। रातिमे हाँसक तीमक आ बासमती चाउरक भात खाइले देलकै। भालेसर रहि गेल हर जोतैसँ लऽ कऽ गाए-बरदकेँ खुआएब-पीआएब धरि काज। दू-तीन दिन धरि दुनूक बीच नोकर-मालिकक सम्बन्ध रहल, तेकर बाद दुनूक बीच सम्बन्ध बदलए लगल। हाट-बजार सेहो दुनू संगे जाए-अबए लगल। ओही गुनीसँ भालेसर गुण सीखने।

भालेसर ऐठामसँ लेलहा अबिते छल तखने टोलेक एक आदमी दौगल लेलहा ऐठाम आएल। ताबे लेलहो पहुँचल। लेलहाकेँ तेतरी पुछलक-

"की भेल?"

टुटैत आशाक स्वरमे लेलहा बाजल-

"गुनी कहलक जे हम मरदनमा मनतर नै जनै छी, हम जा कऽ की करब।"

जे आदमी दौगल आएल छल ओ तेतरीकेँ कहलक-

"भौजी, एकटा मालि झाँप बेचए आएल अछि, ओ कहलक जे हम

छोड़ा देबइ। ओकरा हम अपना ऐठाम बैसौने छी। मुदा ओ कहलक जे बिनु घरवारी कहने नै जाएब।"

ओइ आदमीक संग लेलहा विदा भेल। मालिकेँ देख, दुनू हाथ जोड़ि लेलहा बाजल-

"एक्केटा बेटा अछि, जँ मरि जाएत तँ निपुत्र भऽ जाएब। सिरिफ निपुत्रेटा नै हएब खानदाने खतम भऽ जाएत। कहुना गुलबाकेँ भूत छोड़ा दियौ। बड़ गुन मानब।"

लेलहाक बात सुनि मालि कहलकै-

"एक्कैसटा रूपैआ लगत। जे कोनो अपना खाइले नै लेब। तेते देवी-देवताक पूजा-पाठ करए पड़ैए, ओहीमे खर्च हएत।"

छगाएल मन लेलहाक, गछि लेलक। मालिकेँ संग केने घरपर आएल। आँगन आबि लेलहा तेतरीकेँ कहलक-

"एक्कैसटा रूपैआ मालि लेत तखन किछु करत।"

एक्कैस रूपैआ सुनि तेतरीक मन उड़ि गेल। हाथमे एक्को पाइ नहि। जखन कि बिनु पाइ नेने मालि किछु करबे ने करत। मुदा छोड़बो केना करत।

दरबज्जापर मालिकेँ बैसा दुनू परानी लेलहा रूपैआक भाँज लगबए लगल। मुदा केतौ रूपैआक भाँज नइ लगलै। अन्तमे निराश भऽ लेलहा खुट्टा परहक बियाएल गाए, गामेक पैकारक हाथे बेच लेलक। एक्कैस रूपैआ माइलिक हाथमे जाइते, मालि बाजल-

"डालीमे मूसक माटि आ पंचमीक माटि नेने आउ।"

चँगेरीमे माटि नेने आबि तेतरी माइलिक आगूमे रखि देलक। दहिना हाथ चँगेरीक माटिमे गोरियबैत मालि ठोर पटपटबैत मंत्र पढ़ए लगल। मंत्र पढ़ि मालि लेलहाकेँ कहलक-

"कनी काल और नै अबितौं तँ बच्चा मरि जाइत!"

माइलिक बात सुनि दुनू परानी लेलहा आशा-निराशाक बीच उगए-

डुमए लगल। मालि कहलकै-

"बच्चाकेँ पूब-मुहेँ चद्दर ओढ़ा कऽ सुता दियौ आ ऐ माटिकेँ घर-आँगन सहित अगुआर-पछुआर छीटि दियौ। अँगनासँ सभ देखनिहारकेँ हटा दियौ। हम जाइ छी। जखन सीमा पार भऽ जाएब तखन बच्चाकेँ उधारि देबइ। ओ बच्चा अपने टहलए-बुलए लगत आ कहत जे छुटि गेल।"

लाठीमे टँगल झाँप लऽ मालि विदा भेल। अँगनासँ लेलहा सभकेँ हटा चँगेरी माटि छीटए लगल। रस्तामे मालि घुमि-घुमि पाछुओ-मुहेँ देखैत आ नमहर-नमहर डेग दैत आगूओ बढ़ैत।

कनी कालक पछाइत जखन तेतरी गुलबाक देह परहक चद्दर हटौलक तँ देखलक ओहिना कुहरैत। गुलबाकेँ कुहरैत देख तेतरी पतिकेँ कहलक-

"कहाँ छुटलै?"

हृदैमे आशा रखैत-लेलहा उत्तर देलक-

"कम होइत-होइत ने छुटतै आकि एक्के बेर हरहरा कऽ छुटि जेतइ।"

दुनू परानी लेलहा ओसारपर बैस गप-सप्प करए लगल। कनी कालक पछाइत पुनः गुलबाकेँ तेतरी देखलक। कनियोँ उन्नैस नै होइत देख हलचलाइत तेतरी बाजल-

"मालिबा ठकि लेलक। गाइयो चलि गेल आ गुलबा ठीको नै भेल!"

लेलहाक मुँह दिस तेतरी तकैत आ तेतरीक मुँह दिस लेलहा। आशा-निराशा, जीवन-मरण आ सुख-दुखक बीच दुनू परानी उगए-डुमए लगल।

दोसैर साँझ भऽ गेल। भानसक बेर भऽ गेल। सोगसँ दुनू बेकती मन्हुआएल। जेकरा-ले भानस हएत ओ खेबे ने करत आ जे खाइबला अछि ओकरा अन्न धँसबे ने करतै। तेतरी भानस छोड़ि देलक। गुलबाकेँ उठा ओसारपर देलक। दुनू परानी गुलबे लग बैस गप-सप्प करए लगल। एते काल सिरिफ बेटाक सोग रहै आब बियाएल गाइक सोग सेहो हुअ लगलै। भोर भेल।

गामोमे एकटा भगत। केते गोरेक-मुहेँ लेलहा सुनने जे गामक जे भगत अछि ओ केतेको भूतकेँ लोहाक मोटका काँटीसँ पीपरक गाछमे ठोकने अछि।

अचताइत-पचताइत लेलहा गामक भगत ऐठाम पहुँच, सभ बात कहलक। लेलहाक बात सुनि भगत अपन मेड़िया– डलबाह, मिरदंगिया, भगैत गौनिहार सभकेँ बजौलक। सभ मिलि पूजा ढारैक सामग्रीक लिस्ट बनौलक। आठ गोरेक खेनाइ लगा दू साए रूपैआक खर्च भगत लेलहाकेँ सुनौलक। दुपहर तक रूपैआ बन्दोबस करैक समए भगत लेलहाकेँ देलक। आँगन आबि लेलहा तेतरीकेँ कहलक। तेतरी लेलहाकेँ कहलकै-

"एक साए रूपैआ गाएबला अछि, बाँकी साए रूपैआ केतएसँ औत?"

दुनू परानी चिन्ताक समुद्रमे डुमि गेल। दुनूमे सँ केकरो ने अक चलै आ ने बक। देहक शक्ति कमए लगलै। निराशाक अन्तिम सीमापर पहुँच लेलहा पत्नीकेँ कहलक-

"अगर खेतो बेच कऽ दऽ देबै आ जँ नै छुटै तखन जीब केना?"

बेटाक ममता तेतरीक हृदैकेँ झकझोड़ैत रहइ। एक मन तेतरीक कहै जे खेत रखि बेटाकेँ मरए दिऐ ओहो उचित नहि। दोसर मन कहै जे बेटो चलि जाएत आ खेतो, तखन अपन बुढ़ाड़ी केना चलत? फेर मनमे एलै जे बेटाक सोग बरदास हएत आ खेतक सोग नहि! देखल जेतै बुढ़ाड़ीमे। जँ कमाइक शक्ति नै रहत तँ भीखे माँगब। मुदा अछैते चीजे बेटाकेँ छोड़ि केना देब। साहस करैत तेतरी लेलहाकेँ कहलक-

"की करबै, खेत भरना लगा कऽ दऽ दियौ। कियो ई नै ने कहत जे खेतक लोभे बेटाकेँ मारि देलक।"

जहिना केकरो चारूकातसँ दुश्मन हथियार लऽ घेर लइत। तहिना दुनू

परानी लेलहाक मनमे हुअ लगल। खुट्टापर बान्हल गौड़[1] भूखे-पियासे जोर-जोरसँ डिरियाइत।

मिरदंगक बद्धी मूस काटि देने। मिरदंगियाँ-बद्धी कीनए कमलपुर गेल। बिशेसरसँ मिरदंगियाकेँ चिन्हारे तँए बद्धी कीनि भेँट करए गेल।

बिशेसर हरबाहि कऽ आबि खाइत रहए आकि डेढ़ियापर सँ मिरदंगियाँ शोर पाड़लकै। खाएकेपर सँ बिशेसर अँगने अबैले कहलकै। आँगन आबि मिरदंगियाँ बिशेसर लग बैसल। दुनूक बीच कुशल-झेम भेलइ। बिशेसर मोहिनीकेँ कहलक-

"खाइ बेर छइ। थारीमे नेने आउ।"

जाबे मोहिनी थारी सँठलक ताबे मिरदंगिया हाथ-पएर धोलक। हाथ-पएर धोइ बिशेसरे लग बैसल। दुनू गोरे खेबो करए आ गप्पो करए। लेलहाक सभ बात मिरदंगिया बिशेसरकेँ कहलक। मने-मन बिशेसर सोचलक जे जँ एहेन बात छै तँ लगमे जा कऽ हमहूँ देखब। मिरदंगियाकेँ बिशेसर कहलकै-

"हमहूँ अहींक संग चलि कऽ गुलबाकेँ देखबै।"

खा कऽ दुनू गोरे विदा भेल।

लेलहा ऐठाम आबि बिशेसर देखलक जे दुनू परानी पेटकान लधने अछि। बेटाक सोग, धनक सोग आ खनदानक सोगसँ दुनू परानी लेलहा मरनासन्न अछि। गुलबाकेँ देख मने-मन सोचए लगल जे जाधैर मनुखकेँ जीबै जोकर बुधि नै भऽ जाएत ताधैर अहिना दुखक पहाड़ तर दबि-दबि कुहरैत रहत। भगवानोक लीला अजीव छैन। बुधिक बखारी मनुखकेँ दऽ एहेन बड़का ताला लगा देने छथिन जे सभ-बुते खुगबो ने करैए। जेकरा बुते खुगबो करैत ओ अपने बखारी भरै पाछू जिनगी भरि अपसियाँत रहैए। केकरा के देखत। सभ अपने ताले बेताल अछि। समाज रूपी जंगलमे मनुख रूपी गाछ एहेन अछि जइमे मीठ फल फड़ैबला गाछ झँपा गेल अछि आ कँटहा गाछ एहेन भोगर बनि गेल अछि जे अनाड़ी-धुनाड़ी वौआ जाइए। जइसँ छल-प्रपंची समाजपर हाबी भऽ गेल अछि। एते बात बिशेसरकेँ मनमे

[1] बाछी

अबिते मनमे उठलै- दुखक अन्तिम अवस्थाक उपरान्ते नव जिनगी शुरू होइत... ।

बिशेसर लेलहाकेँ पुछलक-

"एते सोगाएल किए छी?"

बिशेसरक बात सुनि लेलहाक मनमे आशाक मेही ज्योति अबए लगल। नोरसँ भीजल आँखि.., बेथित हृदए... । बाजल-

"भाइ साहैब, बड़ आशा छल जे एहेन सुन्दर दुनियाँमे बाबा-दादीक कोरासँ माए-बापक कोरा होइत जिनगी शुरू भेल। आशाक गाछ नमहर होइत गेल। अदहा रस्तामे आबि बेटाकेँ कोरामे लेलौं मुदा आब पोताकेँ कोरामे नै लऽ सकब दुख एकरे अछि। 'हम केहेन अधरमी खनदानमे भेलौं जे अन्त भऽ रहल अछि।"

मुस्कियाइत बिशेसर बाजल-

"अधरमीसँ धरमात्मा बनब बड़ कठिन नहि अछि सिरिफ रस्ता बदलैक अछि। अखनेसँ धरमक रस्ता धरू सभ आशा पूर भऽ जाएत।"

बिशेसरक बात सुनि लेलहाक हृदैमे जेना अमृतक बून पड़ि गेल। उत्साहित भऽ तेतरीकेँ हाथक इशारासँ शोर पाड़ैत बाजल-

"बिशेसर भाय जे कहै छथिन से सुनू। सभ दुख मेटा जाएत।"

दुनू बेकती बिशेसरक मुँह दिस तकैत ऐगला गप सुनैले कान पाथि देलक।

बिशेसर बाजल-

"अहाँ बेटाकेँ भूत नै लगल अछि। हवा रोग लगल अछि। अखन धरि अहाँ सभ भूत छौड़ौनिहारकेँ बजा-बजा अनलौं। रोग छोड़ौनिहारकेँ नै बजेलौं। चलू हमरा संगे।"

दुनू हाथ जोड़ि तेतरी बिशेसर दिस देखैत पतिकेँ कहलक-

"जाउ, जेतए भैया जाइ छैथ। जिनगीमे कहियो केकरो अधला नै केलिऐ, तखन भगवान एहेन विपैतमे केना दऽ देलैन।"

बिशेसर तेतरीकेँ कहलक-

"जाऊ, अहाँ भानस करू-गे। पहिने बाछीकेँ खाइ-पीऐले दियौ। भूखे परान गमौने की हएत। अँगनाक काज सम्हारू। हम दुनू गोरे जाइ छी।"

करिछौन भेल तेतरीक ठोर अनासुरती बदैल कऽ लाल हुअ लगल। देहक सूतल शक्ति पुनः जागए लगल। अँगना-घर बहारि तेतरी बाछीकेँ पानि पीआ खाइले देलक।

लेलहाकेँ संग केने बिशेसर दीनानाथ वैद ऐठाम पहुँचल। दुनू गोरेकेँ देख दीनानाथ पुछलखिन-

"केमहर एलौं?"

लेलहाकेँ देखबैत बिशेसर कहलकैन-

"हिनकर बेटा लताम तोड़ैले गाछपर चढ़ल। गाछेपर देह झुनझुनाए लगलै। जनिजाति सभ भूत कहि ओझा-गुनी बजबए कहलकैन। दुनू परानी वेचारे ओही पाछू पड़ि गेला। अपने चलि कऽ देखियौ।"

दीनानाथ रोग बुझि गेलखिन। दवाइक बैग लऽ गप-सप्प करैत लेलहा ऐठाम चलला। रस्तामे बिशेसर दीनानाथकेँ पुछलखिन-

"अपने वैदागिरी केना सिखलौं?"

हँसैत दीनानाथ अपन सभ खिस्सा भरि रस्तामे बिशेसरकेँ सुना देलखिन। लेलहा ऐठाम आबि गुलबाकेँ वैदजी देख कहलखिन-

"रोग कोनो असाध नइ छइ। दुइए दिनमे छुटि जेतइ।"

कहि दू दिन-ले चारि खोराक दवाइ दऽ देलखिन। एक खोराक अपना सोझहेमे खुआ दीनानाथ लेलहाकेँ कहलखिन-

"दस मिनटक उपरान्ते रोग कमए लगत आ सौझुका खोराक खुऔला पछाइत बुझि पड़त जे अदहा रोग छुटि गेलइ। चिन्ताक कोनो बात नहि।"

◌ शब्द संख्या : 4651◌

क्रमश: जारी...... ।